।। ॐ संभूत्या अमृतमश्नुते ।। संगठन से ही अमरत्व की प्राप्ति होती है।।

मातृभूमि की धर्मध्वजा का अभिनंदन वंदन। राष्ट्र देवता के चरणों में पावन शब्द नमन।।

पाक्षिक

पाथेय कण

भाद्रपद शु.१० युगाब्द ५११९, वि.२०७४

१ सितम्बर २०१७

वर्ष ३३ : अंक ११

अपनी बात

परम सुहृद पाठक-गण,

सप्रेम नमस्कार।

हमें कई पाठकों से शिकायत मिल रही है कि उन्हें अंक नहीं मिल रहे हैं। पाथेय कण कार्यालय से सभी पाठकों को प्रत्येक अंक नियमित रूप से प्रेषित किया जाता है।

अतः पाठकों से हमारा निवेदन है कि समय पर अंक नहीं मिलने की स्थिति में अपना सदस्यता क्रमांक, नाम व पते के साथ पाथेय कण कार्यालय को पत्र, फोन तथा ई-मेल से सूचित करें।

हमारा ई-मेल इस प्रकार है- **patheykan@gmail.com**

इसी आशा के साथ।

जय श्रीराम।

आपका

प्रबंध सम्पादक

सहयोग राशि

एक वर्ष	₹ 100/-
पन्द्रह वर्ष	₹ 1000/-

प्रबंधकीय कार्यालय

'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.)

सम्पर्क : 9414447123, 9929722111

0141-2529334

Website: www.Patheykan.in

E-mail: patheykan@gmail.com

सबसे बड़ा मज़हब राष्ट्र धर्म है

गत २२ अगस्त को सर्वोच्च न्यायालय ने भारत के मुस्लिम समाज में चल रही तीन-तलाक प्रथा को असंवैधानिक बताते हुए इस पर रोक लगा दी। पाँच न्यायाधीशों की पीठ ने बहुमत से यह निर्णय दिया। इस पीठ में एक हिन्दू, एक पारसी, एक ईसाई और एक मुस्लिम न्यायाधीश थे। मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति खेहर भी इस पीठ में सुनवाई कर रहे थे। तीन न्यायाधीशों ने असंदिग्ध रूप से तीन-तलाक को भारतीय संविधान के खिलाफ बताया वहीं दो ने सरकार से इस प्रथा को रोकने के लिए कानून बनाने को कहा।

सभी राजनैतिक दल तथा विचारवान लोगों ने इस निर्णय का स्वागत किया। इसके विपरीत मुस्लिम संस्थानों और संगठनों ने देश की सर्वोच्च न्यायिक संस्था के निर्णय का विरोध किया। देवबंद के **दारूल उलूम** ने केन्द्र सरकार को धमकी दी है कि तीन-तलाक पर रोक लगाने का प्रयास सरकार न करे। वहाँ के मुफ्ती अबुल कासिम नोमानी ने उक्त निर्णय के बाद सरकार को चेतावनी दी कि 'शरीया' के नियमों में कोई बदल मुसलमान सहन नहीं करेंगे।

सूफी मुसलमानों के सबसे बड़े संगठन **कारवाँ-ए-इस्लामी** के मुखिया मौलाना गुलाम रसूल हामी ने श्रीनगर में एक बयान दे कर सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को रद्द कर दिया। उन्होंने कहा कि सर्वोच्च न्यायालय या भारतीय संसद को कोई भी फैसला देश के बीस करोड़ मुसलमान नहीं मानेंगे। ऐसा ही मत **जमात उलमाये हिन्द** ने प्रकट किया है। जमात मौलवियों और मौलानाओं का संगठन है। इसके प्रवक्ता ने दिल्ली में कहा कि उक्त फैसला 'शरिया' के खिलाफ है तथा मुस्लिम समाज इसे नकारेगा।

दुनिया के लगभग सभी इस्लामी देशों ने तीन बार तलाक कह कर विवाहित पत्नी को छोड़ देने की कुप्रथा का अंत कर दिया है। अरब देश **अल्जीरिया** ने १९८४ में कानून बना दिया कि कोई काजी नहीं बल्कि न्यायालय ही तलाक का फैसला देगा। मुस्लिम राष्ट्र ईराक में विवाह का पंजीकरण कराना होता है और तलाक भी न्यायालय में ही हो सकता है। अर्थात काजी या मौलवी न तो विवाह करा सकता है न तलाक की स्वीकृति दे सकता है। एक अन्य कट्टरपंथी देश **लीबिया** में भी तलाक न्यायालय के माध्यम से ही दिया जा सकता है। तीन तलाक को वहाँ कोई मान्यता नहीं है। **मोरक्को, ट्यूनीशिया, मलयेशिया** जैसे मुस्लिम देशों में भी पति-पत्नी को तलाक के लिये न्यायालय में ही जाना पड़ता है। **इंदोनेशिया** सबसे बड़ा मुस्लिम देश है। वहाँ भी तलाक न्यायालय में ही हो सकता है। किसी ने मुस्लिम रीति से निकाह किया है तो भी तलाक के लिये उसे जिला न्यायालय में ही में प्रार्थना-पत्र देना होगा।

क्या ये मुस्लिम देश 'शरिया' का पालन नहीं कर रहे? यदि ये शरिया यानि मुस्लिम कानूनों का पालन नहीं कर रहे हैं तो क्या ये काफिरों के देश हैं? *...शेष पृष्ठ १७ पर*

निन्दा कस्यापि लोकस्य नैव कार्या सुखेप्सुना।
निन्दतो हि जनान् दुःखमनुयात्यति सत्वरम्।।

सुख चाहने वाले व्यक्ति को चाहिये कि वह कभी किसी की निंदा नहीं करे। दूसरों की बुराई करने से व्यक्ति को दुःख के सिवाय कुछ भी प्राप्त नहीं होता है।

ऐसे सोचते थे दीनदयाल जी

मैं राजनीति में संस्कृति का राजदूत हूँ

यदि हम एकता चाहते हैं तो भारतीय राष्ट्रीयता, जो कि हिन्दू राष्ट्रीयता है तथा भारतीय संस्कृति, जो कि हिन्दू संस्कृति है, उसका दर्शन करें, उसे मापदण्ड मानकर चलें। भागीरथी की इस पुण्यधारा में सभी प्रवाहों का संगम होने दें। यमुना भी मिलेगी और अपनी सारी कालिमा खोकर गंगा की धवल धारा में एकरूप हो जाएगी।

– इतिहास और परम्परा में जो हमारा है, उसे युगानुकूल और बाहर का है, उसे देशानुकूल बनाकर हमें आगे बढ़ना है।

– मैं राजनीति में संस्कृति का राजदूत हूँ। राजनीति का संस्कृति से शून्य हो जाना अच्छा नहीं है।

– देश की एकता और अखण्डता का प्रश्न ही हमारी श्रद्धा का विषय है और उसकी प्राप्ति के लिए हम कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

– कोई भी विदेशी सहायता बिना किसी शर्त के नहीं मिलती है।

– प्रहारात्मक सिद्धता ही श्रेष्ठ सुरक्षा व्यवस्था है। अतः राष्ट्र का सैनिकीकरण व सेना का आधुनिकीकरण करें।

– संघ के स्वयंसेवक के लिए पहला स्थान देश के कार्य का रहता है और बाद में व्यक्तिगत कार्य का।

– भारत तथा अन्य देशों के इतिहास का विचार करने से यह सिद्ध होता है कि केवल भौगोलिक एकता राष्ट्रीयता के लिए पर्याप्त नहीं है। एक देश के निवासी एक राष्ट्र तभी बनते हैं जब वे एक संस्कृति द्वारा एकरूप कर दिए गए हों।

– ग्रामों में जहाँ समय खड़ा है, जहां माता और पिता अपने बच्चों के भविष्य को बनाने में असमर्थ हैं, वहां जब तक आशा और पुरुषार्थ का संदेश नहीं पहुंचा पायेंगे तब तक हम राष्ट्र के चैतन्य को जाग्रत नहीं कर सकेंगे। हमारी श्रद्धा का केन्द्र, आराध्य और उपास्य, हमारे पराक्रम और प्रयत्न का उपकरण तथा उपलब्धियों का मानदण्ड वह मानव होगा जो आज शब्दशः अनिकेत और अपरिग्रही है।

भारत में रहनेवाला और इसके प्रति ममत्व की भावना रखने वाला मानव समूह एक जन है। उसकी जीवन प्रणाली ,कला , साहित्य , दर्शन सब भारतीय संस्कृति है। इसलिए भारतीय राष्ट्रवाद का आधार यह संस्कृति है। इस संस्कृति में निष्ठा रहे तभी भारत एकात्म रहेगा।

– मानव प्रकृति में दो प्रवृत्तियां रही हैं – एक तरफ क्रोध और लोभ तो दूसरी तरफ प्रेम और त्याग।

बीज की एक इकाई विभिन्न रूपों में प्रकट होती है – जड़ें, तना, शाखाएं, पत्तियां, फूल और फल। इन सबके रंग और गुण अलग-अलग होते हैं, फिर भी बीज के द्वारा हम इन सबके एकत्व के रिश्ते को पहचान लेते हैं।

–सुशील कुमार

आगामी पक्ष (१६ से ३० सितम्बर २०१७) के अवसर
(आश्विन कृ.११ से आश्विन शु. १० तक)

जन्मदिवस

१७ सितम्बर – विश्व के प्रथम शिल्पी भगवान विश्वकर्मा की जयंती।
– गीता प्रेस गोरखपुर के संस्थापक हनुमान प्रसाद पोद्दार का जन्म दिवस (१८६२)।

आश्विन शु.१(२१ सित.)– महाराजा अग्रसेन का जन्मदिवस

२४ सितम्बर (१८६१) – जर्मनी के एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भारत का राष्ट्रीय ध्वज फहराने वाली क्रांतिकारी मैडम भीकाजी कामा का जन्मदिवस

२८ सितम्बर (१९०७) – प्रसिद्ध क्रांतिकारी सरदार भगतसिंह का जन्मदिवस

आश्विन शु.८ (२८ सित.)–लोकदेवता कल्लाजी का जन्म दिवस (वि.१६०१)

आश्विन शु.१० – आचार्य शंकर देव का जन्म दिवस(सन् १४४८ वि. १५०५)

(विजयदशमी–३० सित.)–सम्राट हेमचन्द विक्रमादित्य का जन्म दिवस (१५०१),
– मध्वाचार्य जयंती (वि. १३७६, यु. ४४२१)

शहादत

१७ सितम्बर (१८६०)– कोटा में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व करने वाले लाला जयदयाल और मेहराब खान को फांसी

१९ सितम्बर (१७२६)– हिन्दवी स्वराज्य के एक स्तम्भ खण्डो-बल्लाल की पुण्यतिथि

३० सितम्बर (१९१५)– पत्रकार, लेखक एवं प्रसिद्ध क्रांतिकारी सूफी अम्बा प्रसाद की शहादत।

महत्वपूर्ण घटना

२३ सितम्बर (१८७३) – महात्मा ज्योतिबा फुले द्वारा सत्यशोधक समाज की स्थापना, **हैफा दिवस**

आश्विन शु.१० (विजयदशमी–३० सितम्बर) – लाचित बड़फुकन ने मुगलों को हराया (१६७०), दिवेर युद्ध में महाराणा प्रताप के हाथों मुगलों की पराजय (१५८२), राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना (१९२५), राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना (१९३६)

हटनी ही चाहिये मूल अधिकारों तथा

मानवाधिकारों का हनन करने वाली धारा ३५ ए

इन दिनों जम्मू-कश्मीर से सम्बन्धित अनुच्छेद ३५ (ए) की काफी चर्चा हो रही है। सर्वोच्च न्यायालय की ३ न्यायाधीशों की संविधान पीठ इस मामले की सुनवाई कर रही है। उधर कश्मीर के सभी विपक्षी दल, अलगाववादी तथा आतंकी गिरोह धारा ३५ (ए) से छेड़-छाड़ करने पर गम्भीर परिणामों की धमकी दे रहे हैं। यहाँ तक कि ***राज्य की मुख्मंत्री ने भी चेतावनी दे दी है कि ३५(ए) से छेड़-छाड़ की गई तो कश्मीर में कोई तिरंगा उठाने वाला नहीं मिलेगा।*** इसी के साथ घाटी में 'बन्द' प्रदर्शन तथा बयानबाजी का सिलसिला शुरु हो गया है।

क्यों हो रही है सुनवाई - *प्रश्न उठता है कि आखिर उच्चतम न्यायालय की संविधान पीठ क्यों धारा ३५ ए के पक्ष और विपक्ष के तर्क सुन रही है?*

सन् २००५ में 'जम्मू-कश्मीर स्टडी सेण्टर' नाम के एक गैर सरकारी संगठन ने न्यायालय के समक्ष उक्त धारा को समाप्त करने की माँग रखी थी। इस संगठन ने तर्क दिया कि अनुच्छेद ३५(ए) संविधान में दिए गये बराबरी के मूल अधिकार का उल्लंघन करता है। अपील में यह भी कहा गया अनुसूचित जाति-जनजाति के लोगों को उक्त धारा के प्रभाव के कारण उनके अधिकारों से वंचित किया जा रहा है। न्यायालय में विचार के लिये उक्त अपील स्वीकार कर ली गई।

> ***"जम्मू-कश्मीर का नागरिक तो पूरे भारत का नागरिक है किन्तु भारत का नागरिक कश्मीर का नागरिक नहीं है। ऐसी विचित्र स्थिति भारत के अतिरिक्त दुनिया के किसी अन्य देश में नहीं है। यह स्थिति संविधान के अनुच्छेद ३५ए के कारण ही बनी है।"***

कुछ समय पहले श्रीमती चारु वली खन्ना तथा डॉ.सीमा भार्गव ने भी न्यायालय में ३५(ए) को निरस्त करने की प्रार्थना की। श्रीमती चारुवली खन्ना वकील हैं तथा राष्ट्रीय महिला आयोग की पूर्व सदस्य हैं। श्रीमती सीमा राजदान भार्गव डाक्टर हैं तथा कश्मीरी पण्डित हैं। उनकी याचिका में भी यही तर्क दिया है कि धारा ३५(ए) भारतीय संविधान में दिये गये मूल अधिकारों के विरोध में है। इस याचिका के बाद सर्वोच्च न्यायालय ने केन्द्र सरकार की राय माँगी। केन्द्र सरकार ने स्पष्ट किया कि धारा ३५(ए) पर विस्तार से विचार किया जाना चाहिये। इसलिये तीन जजों की संविधान पीठ इस मामले की सुनवाई कर रही है।

कब जोड़ा गया अनुच्छेद ३५ ए - यह अनुच्छेद वर्ष १९५४ में तत्कालीन राष्ट्रपति डा.राजेन्द्र प्रसाद के आदेश से संविधान में जोड़ा गया। संविधान में जब भी कोई संशोधन होता है तो वह संसद की मंजूरी के बाद होता है।

लेकिन धारा ३५ (ए) को संसद ने आज तक स्वीकृति प्रदान नहीं की है। राष्ट्रपति के आदेश मात्र से यह धारा संविधान में जुड़ गई। अनुच्छेद ३६८ में दिये गये किसी प्रावधान का पालन इसमें नहीं किया गया। इसका अर्थ यह है कि राष्ट्रपति के आदेश से यह हटाई भी जा सकती है।

इस प्रश्न को यहीं छोड़ कर धारा ३७० तथा ३५ ए की पृष्ठभूमि पर विचार कर लेना ठीक होगा। महाराजा हरिसिंह ने जम्मू-कश्मीर रियासत को बिना किसी शर्त के भारत में मिला दिया था। छह सौ अन्य छोटी बड़ी रियासतों की ही तरह जम्मू-कश्मीर भी भारत का हिस्सा बना था। फिर भी तब के प्रधानमंत्री ने जम्मू-कश्मीर राज्य को विशेष अधिकार प्रदान करने के लिये संविधान में 'धारा ३७०' को जुड़वा दिया।

पाकिस्तान के कश्मीर पर आक्रमण के बाद भारत सरकार ने संयुक्त राष्ट्र संघ में पाकिस्तान की शिकायत की जब कि इसकी कतई कोई जरूरत नहीं थी। सं.रा.सं. ने अन्य सुझावों के अतिरिक्त यह सुझाव भी दिया गया कि जम्मू-कश्मीर में जनमत संग्रह किया जाये। वहाँ की जनता तय करे कि उसे भारत में रहना है या पाकिस्तान के साथ जाना है। **लेकिन यह जनमत संग्रह उसी स्थिति में होना था कि जब पाकिस्तान पूरे कश्मीर से अपनी सेना हटा लेता।**

धारा ३७० की रिश्वत - शेख अब्दुल्ला ने पं. नेहरु को यह समझाया कि यदि कश्मीरियों को विशेष अधिकार दे दिये जायें तो वे जनमत-संग्रह में भारत के पक्ष में मतदान करेंगे। पं. नेहरु शेख के झाँसे में आ गये और संविधान में अनुच्छेद ३७० शामिल करवा दिया। इस धारा के कारण जम्मू-कश्मीर को अपना अलग संविधान बनाने की छूट मिल गई। इसी के साथ राज्य को अपना झण्डा रखने का अधिकार भी मिल गया। कश्मीर सरकार का राज्यपाल 'सदरे रियासत' और मुख्यमंत्री प्रधानमंत्री बन गया।

बाबा साहब अम्बेडकर ने धारा ३७० का जबर्दस्त विरोध किया, किन्तु पं. नेहरु ने अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर गोपाल स्वामी अयंगर के माध्यम से इसे संविधान में शामिल करवा लिया।

धारा ३७० के कारण एक भारत देश में दो संविधान, दो निशान (झण्डे) और दो प्रधानमंत्री हो गये।

नये नये राजनैतिक दल 'भारतीय जनसंघ' के अध्यक्ष डा. श्याम प्रसाद मुखर्जी धारा ३७० के गम्भीर परिणामों को समझ गये थे। इसलिये जनसंघ ने अपने जन्म के साथ ही एक देश में दो विधान, दो निशान और दो प्रधान के खिलाफ आन्दोलन छेड़ दिया।

रिश्वत से किसी को संतुष्ट करने का प्रयास हमेशा अनिष्टकारी होता है। इसीलिये धारा ३७० ने कश्मीरियों में राष्ट्रीयता का भाव पैदा करने के स्थान पर अलगाववाद बढ़ा दिया।

रिश्वत पर ३५ 'ए' की रिश्वत और - धारा ३७० के बाद भी शेख संतुष्ट नहीं था। भयादोहन (ब्लेक मेल) करने वाले को

धारा ३५ ए के दुष्परिणाम

उनके दोनों हाथों में लड्डू और यहाँ हाथ खाली

धारा ३५ ए के कारण कोई भी भारतीय जो ज.क. का नागरिक नहीं है, इस राज्य में जमीन, मकान आदि नहीं खरीद सकता। इसके उलट अधिकांश अलगाववादियों सहित अनेक कश्मीरियों ने पूरे भारत में अकूत सम्पत्ति खरीद रखी है।

जम्मू-कश्मीर की कोई महिला यदि किसी भारतीय से विवाह कर ले तो वह राज्य की नागरिक नहीं रहती। परिणामस्वरूप उसकी विवाह से पूर्व की सम्पत्ति सरकार जब्त कर लेती है। नई सम्पत्ति खरीदने का अधिकार तो उसका खत्म हो ही जाता है।

कश्मीर के अलगाववादियों के सब बच्चे दिल्ली, मुम्बई के उत्कृष्ट स्कूलों, कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। यदि कोई भारतीय प्रशासनिक या अन्य सेवाओं का अधिकारी ज.क. में नियुक्त हो तो उसका बेटा कश्मीर में शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकेगा। शेष भारत के छात्र-छात्राएं राज्य सरकार के मेडिकल, इंजीनियरिंग आदि कॉलेजों में प्रवेश नहीं ले सकते। केन्द्र सरकार की जो शिक्षण संस्थाएं राज्य में हैं उन्हीं में शेष भारत के लोगों का प्रवेश हो सकता है।

स्वतंत्रता मिलने के समय कश्मीर में जो वाल्मीकि या अन्य अनुसूचित जाति के लोग रहते थे उन्हें इस शर्त पर नागरिकता दी गई कि वे केवल सफाई का काम करेंगे अन्य कोई कार्य नहीं कर सकेंगे। अतः ७० सालों के बाद भी वे सफाई का काम ही करते हैं। शेष भारत में मिलने वाला आरक्षण का लाभ भी उन्हें प्राप्त नहीं है।

१९४७ में ५० हजार हिन्दू पाकिस्तान से आकर जम्मू-कश्मीर में बस गये थे। आज उनकी संख्या तीन लाख से अधिक है। उनको आज तक राज्य की स्थाई नागरिकता नहीं मिली है।

यदि धन दे दिया जाये तो उसकी भूख और बढ़ जाती है। तत्कालीन केन्द्र सरकार शेख अब्दुल्ला की प्रत्येक माँग पूरी करने को तैयार रहते थे। अतः १९५२ में पुनः भारत सरकार और शेख-अब्दुल्ला में एक समझौता हुआ जो **दिल्ली-समझौते** के नाम से जाना गया। इसी समझौते में अन्य बातों के साथ-साथ जम्मू-कश्मीर सरकार को नागरिकता तय करने का अधिकार भी दिया गया। *कौन व्यक्ति राज्य का स्थायी नागरिक है और कौन नहीं यह निश्चित करने का अधिकार जम्मू-कश्मीर की सरकार को दे दिया गया।*

सन् १९५४ में राष्ट्रपति के आदेश से जो धारा ३५ 'ए' भारत के संविधान में जोड़ी गई वह जम्मू-कश्मीर की सरकार को राज्य की नागरिकता तय करने का अधिकार ही देती है।

लेकिन अनुच्छेद ३५ 'ए' जोड़े जाने से पहले ही शेख अब्दुल्ला को देशद्रोह के अपराध में जेल में डाल दिया गया। ९ अगस्त को जब वह एक पाकिस्तानी एजेंट से मिलने तन्मर्ग(गुलमर्ग के पास) जा रहा था तब उसे गिरफ्तार कर बर्खास्त कर दिया गया। जब राष्ट्रपति डा.राजेन्द्र प्रसाद ने धारा ३५ 'ए' की अधिसूचना पर हस्ताक्षर किये उस समय बक्शी गुलाम मोहम्मद जम्मू-कश्मीर के प्रधानमंत्री थे।

अलगाववादी प्रावधान - अनुच्छेद ३७० ने जम्मू-कश्मीर के भारत का अभिन्न अंग होने पर सवाल खड़ा कर दिया और धारा ३५ 'ए' ने इसे पूरी तरह अलग हो जाने के रास्ते पर बढ़ा दिया।

जम्मू-कश्मीर की संविधान-सभा ने राज्य का अलग संविधान बनाते समय यह तय कर दिया कि **(१) १९५४ में जो दस सालों से राज्य में रह रहा है वह राज्य का स्थायी नागरिक होगा, (२) राज्य का स्थायी नागरिक ही राज्य में कोई सम्पत्ति बना या खरीद सकेगा, (३) राज्य सरकार की नौकरियाँ भी राज्य के स्थायी नागरिक को ही मिलेगी तथा (४) स्थायी नागरिकों के बच्चे ही राज्य के मेडिकल, इंजीनियरिंग या अन्य व्यवसायी संस्थानों में प्रवेश ले सकेंगे। सरकारी छात्रवृत्तियाँ व अन्य सहायता भी स्थायी नागरिकों को ही मिलेगी।**

राज्य का यह संविधान १९५६ में लागू हो गया और तभी से राज्य सरकार को यह अधिकार मिल गया कि वह किसे राज्य का नागरिक माने और किसे नहीं। **कश्मीर का नागरिक पूरे भारत का नागरिक होगा किन्तु भारत के नागरिक कश्मीर के नागरिक नहीं होंगे।** ऐसी विचित्र स्थिति भारत के अतिरिक्त दुनिया के किसी भी अन्य देश में नहीं है। यह नागरिकता का मुद्दा ही अलगाव-वाद का सबसे बड़ा कारण है।

इसलिये अलगाव, राष्ट्र द्रोह और अराजकता को जन्म देने वाली धारा ३५ ए तथा धारा ३७० समाप्त होनी ही चाहिये।

शेख की चालाकी - अनुच्छेद ३५ 'ए' धारा ३७० का परिणाम है और इसके हटने पर ३५ 'ए' भी समाप्त हो सकती है। संविधान में ही लिखा है कि धारा ३७० **अस्थायी** है। यह भी है कि राष्ट्रपति इसे निरस्त कर सकते हैं लेकिन इसके लिये कश्मीर विधान सभा की सहमति आवश्यक है।

शेख अब्दुल्ला ने बड़ी चालाकी से ऐसी स्थिति बना दी कि राज्य की विधान सभा कभी ऐसी अनुशंसा कर ही न सके। कश्मीर घाटी की जनसंख्या जम्मू से कम है किन्तु विधान सभा की सीटें घाटी में अधिक हैं। इसलिये राष्ट्रवादियों का बहुमत कभी राज्य विधान सभा में होगा ही नहीं। सदा अलगाववादियों की ही तूती बोलती रहेगी।

यहाँ एक और ध्यान में रखने की बात यह है कि धारा ३७० लागू करते समय आपसी समझ यही बनी थी कि जम्मू-कश्मीर का संविधान स्वीकृत होते ही धारा ३७० स्वतः ही समाप्त हो जायेगी। शेख अब्दुल्ला व नेशनल कांन्फ्रेंस ने चालाकी से यह भी नहीं होने दिया। ❑

औद्योगिकीकरण के पुरोधा – भारतरत्न विश्वेश्वरैया

आधुनिक भारत के विश्वकर्मा श्री मोक्षगुण्डम विश्वेश्वरैया का जन्म १५ सितम्बर, १८६१ को कर्नाटक के मैसूर जिले में मुदेनाहल्ली ग्राम में पण्डित श्रीनिवास शास्त्री के घर हुआ था। निर्धनता के कारण विश्वेश्वरैया ने घर पर रहकर ही अपने परिश्रम से प्राथमिक स्तर की पढ़ाई की।

जब वे १८ वर्ष के थे, तब इनके पिता का देहान्त हो गया। इस पर वे अपने एक सम्बन्धी के घर बंगलैार आ गये। घर छोटा होने के कारण ये रात को मन्दिर में सोते थे। कुछ छात्रों को ट्यूशन पढ़ाकर इन्होंने पढ़ाई का खर्च निकाला। मैट्रिक और बी.ए. के बाद इन्होंने मुम्बई विश्वविद्यालय से अभियन्ता की परीक्षा सर्वोच्च स्थान लेकर उत्तीर्ण की। इस पर इन्हें तुरन्त ही सहायक अभियन्ता की नौकरी मिल गई।

उन दिनों प्रमुख स्थानों पर अंग्रेज अभियन्ता ही रखे जाते थे। भारतीयों को उनका सहायक बनकर ही काम करना पड़ता था, पर विश्वेश्वरैया ने हिम्मत नहीं हारी। प्रारम्भ में इन्हें पूना जिले की सिंचाई व्यवस्था सुधारने की जिम्मेदारी मिली। इन्होंने वहाँ बने पुराने बाँधों में स्वचालित फाटक लगाकर ऐसे सुधार किये कि अंग्रेज अधिकारी भी इनकी बद्धि का लोहा मान गये। ऐसे ही फाटक आगे चलकर ग्वालियर और मैसूर में भी लगाये गये।

कुछ समय के लिए नौकरी से त्यागपत्र देकर श्री विश्वेश्वरैया विदेश में नयी तकनीकों का अध्ययन करने के लिए चले गये। वहाँ से लौटकर १९०९ में उन्होंने हैदराबाद में बाढ़ से बचाव की योजना बनाई। इसे पूरा करते ही उन्हें मैसूर का मुख्य अभियन्ता बना दिया गया। इस पद पर रहते हुए उन्होंने अनेक जनहित के काम किये। इस कारण वे नये मैसूर के निर्माता भी कहे जाते हैं।

विश्वेश्वरेया ने सिंचाई के लिये कृष्णराज सागर और लौह उत्पादन के लिए भद्रावती का इस्पात कारखाना बनवाया। मैसूर विश्वविद्यालय तथा बैंक ऑफ मैसूर की स्थापना भी उन्हीं के प्रयासों से हुई। वे बहुत अनुशासन प्रिय व्यक्ति थे। वे एक मिनट भी व्यर्थ नहीं जाने देते थे। वे किसी कार्यक्रम में समय से पहले या देर से नहीं पहुँचते थे। वे अपने पास एक नोटबुक और लेखनी रखते थे। जैसे ही वे कोई नयी बात देखते या कोई नया विचार उन्हें सूझता, वे उसे तुरन्त लिख लेते। विश्वेश्वरैया निडर देशभक्त भी थे। मैसूर का दशहरा प्रसिद्ध है। उस समय होने वाले दरबार में अंग्रेज अतिथियों को कुर्सियों पर बैठाया जाता था, जबकि भारतीय धरती पर बैठते थे। विश्वेश्वरैया ने इस व्यवस्था को बदलकर सबके लिए कुर्सियाँ लगवायीं। उनकी सेवाओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए शासन ने १९५५ में उन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया।

शतायु होने पर उन पर डाक टिकट जारी किया गया। जब उनके दीर्घ एवं सफल जीवन का रहस्य पूछा गया, तो उन्होंने कहा– मैं हर काम समय पर करता हूँ। समय पर खाता, सोता और व्यायाम करता हूँ। मैं क्रोध से भी सदा दूर रहता हूँ। १०१ वर्ष की आयु में १४ अप्रेल १९६२ को उनका देहान्त हुआ।

–विजय कुमार

हैफा को बचाया था भारतीय सैनिकों ने

भारतीय सैनिकों के पराक्रम का लोहा पूरी दुनिया मानती है। अपनी सीमाओं की रक्षा में ही नहीं अन्य देशों की स्वतंत्रता की रक्षा में भी भारत के जवानों ने वीरता के झण्डे गाड़े हैं। प्रथम विश्व–युद्ध में इजरायल के प्रसिद्ध बंदरगाह नगर हैफा की रक्षा भारत की जोधपुर, मैसूर और हैदराबाद लांसर्स के जवानों ने की।

हैफा बन्दरगाह को तुर्क और जर्मन सेनाओं ने घेर लिया था तथा ब्रिटिश सेना बुरी तरह फँस गई थी। ऐसे में अंग्रेज सैनिक अधिकारियों ने भारतीय जवानों की उक्त घुड़सवार टुकड़ियों को हैफा को बचाने की जिम्मेदारी सौंपी। भारतीय जवानों के पास केवल तलवारें और भाले थे जबकि जर्मन सेनाओं के पास अत्याधुनिक हथियार थे। भारतीय जवानों ने अद्‌भुत शौर्य का प्रदर्शन करते हुए संख्या में कहीं अधिक दुश्मनों को मार भगाया।

युद्ध में शहीद भारतीय सैनिकों का एक सुन्दर स्मारक हैफा में बना हुआ है। भारतीय सेना भी हर साल उन जवानों की याद में २३ सितम्बर को 'हैफा दिवस' मनाती है।

अपने देश और संस्कृति को हम कितना जानते हैं

यहाँ अपने देश के इतिहास, भूगोल तथा संस्कृति सम्बन्धी दस प्रश्न दिये गये हैं। इनका उत्तर दें और परीक्षा करें कि अपने देश के संबंध में आप कितना जानते हैं?

१. माता सीता की खोज के लिये जाते समय श्रीराम ने हनुमान को कौन सी वस्तु दी थी?
२. महाभारत के युद्ध में कुल कितनी सेना ने भाग लिया था?
३. दक्षिण पूर्व एशिया के किस देश में उस नगर के खण्डहर मिले हैं जिसका नाम पूर्व में इन्द्रपुर था?
४. राजस्थान के विराट नगर में देवी का कौन सा शक्तिपीठ स्थित है?
५. प्रसिद्ध ग्रन्थ दासबोध किनका लिखा हुआ है?
६. विजय नगर साम्राज्य की नीव रखने वाले हरिहर और बुक्का के गुरु कौन थे?
७. धातु के दर्पण सम्पूर्ण विश्व में केवल भारत में ही बनते थे। किस स्थान पर ये दर्पण आज भी बनाये जाते हैं?
८. बंगाल में अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता संघर्ष सबसे पहले किन्होंने प्रारम्भ किया था?
९. तुर्क अल्तमश को नागदा के पास मेवाड़ के किन महाराणा ने धूल चटाई?
१०. दक्षिण भारत में हिन्दू संगठन के कार्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की जड़ें जमाने वाले कौन थे?

(उत्तर इसी अंक में है)

देश बाँटने में लीन सेकुलर गठजोड़

अंक संदर्भ : १६ जुलाई २०१७

१६ जुलाई के अंक में 'सैनिकों की शहादत पर शोक क्यों नहीं'आमुख कथा पढ़ी। सेकुलर जमात का गठजोड़ पाखण्ड के सिवा कुछ नहीं है। यह गठजोड़ वास्तव में हिन्दू समाज के साथ-साथ पूरे देश को बांटने में लगा हुआ है।

*-**हुकमचन्द चौधरी,** सपोटरा (करौली)*

हमारे देश की सेकुलर जमात अपने स्वार्थ को साधने के लिए किसी भी स्तर तक जाने को तैयार रहती है। उनका यह दोगलापन किसी से छुपा हुआ नहीं है। भारत के इतिहास को विकृत करने वाले, देश की संस्कृति से खिलवाड़ करने वाले ऐसे पाखण्डी लोग देश के लिए अत्यंत घातक हैं।

*-**पंकज लखेरा,** टोंक*

अयूब पंडित और उमर फैयाज के विषय में अंक में पढ़ा। ऐसे देशभक्त पुलिस ऑफिसर के साथ जो हुआ वह शर्मसार करने वाला है। राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में शामिल देशद्रोहियों को तो सूली पर चढ़ा देना चाहिये।

*-**प्रभुसिंह राणावत,** साण्डेराव (पाली)*

साभार : दैनिक जागरण

लगाम कसने की जरूरत

अंक में 'एकता और अखण्डता को खुली चुनौती' संपादकीय पढ़ा। सामयिक विषयों पर दिया गया संपादकीय असरदार होता है। पाथेय कण इस परम्परा का निर्वाह बखूबी कर रहा है।

*-**विजय कुमार तिवाड़ी,** अलवर*

देश की अखण्डता को चुनौती देने वाले औवेसी जैसे राष्ट्रद्रोहियों पर लगाम कसने की जरूरत है। समय रहते ऐसी प्रवृतियों वाले लोगों पर काबू नहीं पाया गया तो ये लोग देश के लिए नासूर बन जायेंगे।

*-**रवि कुमार शर्मा**, अजमेर*

आपात-काल के संस्मरण

आपातकाल के संस्मरण देशवासियों पर किये गये अत्याचारों की वास्तविकता को बताते हैं। आम जनता के अधिकारों का हनन कर उनके साथ दमनकारी व्यवहार किया गया। देशभक्त कार्यकर्ताओं का संघर्ष वास्तव में हमारे लिए प्रेरणादायक है।

*-**उज्ज्वल जैन,** सरवाड़ (अजमेर)*

आपातकाल की आप-बीती देश की नौजवान पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। सत्ता सुख भोगते हुए जिस प्रकार से तत्कालीन सरकार ने तानाशाही लागू की वह इतिहास का काला अध्याय है।

*-**जगदीश केशवानी**, जोधपुर*

आम जनता का तानाशाही सरकार से हिम्मत के साथ मुकाबला करने की गाथा हैं आपातकाल के संस्मरण। जिन लोगों ने इसे प्रत्यक्ष में सहा वो तो वास्तव में बड़े हिम्मत वाले लोग रहे होंगे। सचमुच यह उनके साहस और धैर्य की पराकाष्ठा थी।

*-**संजय कुमार**, अमरसर, जयपुर*

भारत की वैज्ञानिक परम्परा

प्राचीन काल के विश्व प्रसिद्ध पशु चिकित्सक शालिहोत्र पर विस्तृत और रोचक जानकारी अंक में पढ़ी। शालिहोत्र पर इस प्रकार की जानकारी हमने पहले नहीं पढ़ी।

*-**सुरेश प्रजापत**, निवाई (टोंक)*

भारत की वैज्ञानिक परम्परा कितनी विकसित थी, इसका पता शालिहोत्र के जीवन से चलता है। ऐसे अनेकों श्रेष्ठ वैज्ञानिक भारत की प्राचीन परम्परा में देखने और पढ़ने को मिलते हैं। आज की अनभिज्ञ युवा पीढ़ी के लिए ऐसे नवीन समाचार ज्ञानवर्द्धक सिद्ध होंगे।

*-**प्रताप सिंह राठौड़,** रींगस(सीकर)*

शालिहोत्र जैसे वैज्ञानिकों के विषय कम ही सुनने और पढ़ने को मिलता है। इस प्रकार के लेख प्रत्येक अंक में प्रकाशित करने का आपसे आग्रह है।

*-**रमेशचन्द सोनी,** भीनासर (बीकानेर)*

भारत के महापुरुष

अंक में ईश्वर चन्द्र विद्यासागर और लाल बहादुर शास्त्री जी के विषय में दिये गये प्रसंग पढ़े। भारत-भूमि ऐसे ही महापुरुषों की खान है। महान लोगों के प्रेरक कार्यों को ही जीवन में उतारने की प्रेरणा ऐसी बोध कथाओं से मिलती है।

*-**टेकचन्द शर्मा,** झुन्झुनू*

बाल-मित्रों का पन्ना अच्छा लगता है। प्रेरक बोध-कथायें बाल-मन पर अपना गहरा असर छोड़ती है। नमन है ऐसे महापुरुषों को जो आज भी हमें प्रेरणा दे रहे हैं।

*-**राकेश सैनी,** विराट नगर (जयपुर)*

ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तरी

'अपने देश को हम कितना जानते हैं' तथा 'बाल-प्रश्नोत्तरी' पूरे परिवार का ज्ञानवर्धन करने वाली जानकारी से ओतप्रोत होती है। अंक में दी जा रही प्रश्नोत्तरी ने तो हमारे बच्चों में विद्यालय की पुस्तकों के साथ-साथ अन्य पुस्तकें पढ़ने की ललक पैदा कर दी है।

*-**पुष्पेन्द्र नायर,** कांकरोली (राजसमन्द)*

प्रेरक चित्रकथा

अंक में दी जा रही महान क्रांतिकारी वीर सावरकर की जीवन की गाथा बढ़ी प्रेरक है। महान क्रांतिकारियों के जीवन प्रसंगों से कर्तव्यनिष्ठा, स्वाभिमान तथा राष्ट्रभक्ति जैसे गुणों को अपने जीवन में उतारने की प्रेरणा मिलती है।

*-**राहुल अग्रवाल,** गोलाका बास, अलवर*

महिलाओं का सामर्थ्य बढ़ाने की आवश्यकता है – ऊषा ताई चाटी

राष्ट्र सेविका समिति की १९९४ से २००६ तक प्रमुख संचालिका रहीं ऊषा ताई चाटी का गत १७ अगस्त को नागपुर में निधन हो गया। सन् २००० में समिति के शिक्षा वर्ग में जयपुर आईं थीं। उस समय पाथेय कण ने उनका साक्षात्कार लिया था। उसी वर्ष जुलाई (प्र.) अंक में यह प्रकाशित हुआ था। उन्हें श्रद्धांजलि के रूप में वह साक्षात्कार पुनः प्रकाशित किया जा रहा है।

- ताई जी, इस समय समिति के कार्य की क्या स्थिति है ?

– इस समय पूरे देश में समिति की ३,५०० शाखाएं चल रही हैं। अब शहरी क्षेत्रों के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं भी प्रशिक्षण लेने को आने लगी है। इस प्रकार अपना काम चल रहा है और आगे भी बढ़ेगा, ऐसा लगता है।

- किस प्रान्त विशेष में समिति का काम अच्छा चल रहा है ?

– प्रान्त विशेष की दृष्टि से महाराष्ट्र में काम अच्छा है। कार्यकर्ता बहिनों की संख्या बढ़ रही है। उसके साथ–साथ कर्नाटक में भी काम बढ़ रहा है। कुछ क्षेत्रों जैसे– असम में काम करना कठिन है। विरोध अधिक है। फिर भी संकटों के बावजूद वहां कार्य बढ़ रहा है। वहां की प्रचारिकाओं को लगता है कि आत्मरक्षा तथा अस्मिता जागरण के लिए इस कार्य की बहुत आवश्यकता है। हाल ही में हमने बिहार में भी काम बढ़ाने का प्रयास किया है।

(गणेश चतुर्थी १९२७-१७ अगस्त २०१७)

- पिछले करीब ६४ वर्षों से समिति का कार्य चल रहा है। इस काम की शुरुआत एक विशिष्ट उद्देश्य को लेकर हुई थी। समिति इस उद्देश्य को किस हद तक पूरा कर सकी है ?

– समिति का मुख्य उद्देश्य है महिलाओं को संगठित करना और दूसरा उद्देश्य है महिलाओं की सब प्रकार की मानसिक तथा शारीरिक शक्ति बढ़ाना। सभी प्रान्तों में जहां अपनी कार्यकर्ता बहिनें काम करती हैं वे अत्यन्त आत्मविश्वास से काम कर रही हैं। कार्य को बढ़ाने के बारे में सोच रही हैं। संगठन की दृष्टि से देखें तो संगठित शक्ति भी थोड़ी बढ़ गई है। दूसरी बात यह है कि असम, जम्मू आदि में अकेले जाकर काम करने का मानस प्रचारिकाओं का बना है।

- समिति का उद्देश्य सामाजिक परिवर्तन का भी है। तो समिति के काम से समाज में कितना परिवर्तन आया है ?

– कुछ प्रदेशों, जैसे– राजस्थान, उत्तर प्रदेश आदि में जब हम काम करने गये तो वहां की महिलाओं की काम करने की मानसिकता नहीं थी। समाज भी नहीं चाहता था कि वे घर की चौखट से बाहर जाकर काम करें। लेकिन अब हम देख रहे हैं कि इन प्रांतों में काम चलने से महिलाएं भी स्वयं आगे आकर काम कर रही हैं। इसके अतिरिक्त सेविका समिति में संस्कार प्राप्त कर अनेक बहिनों ने नारी शक्ति के जागरण हेतु अन्यान्य काम शुरु किये हैं। कुछ सेविकाओं ने अन्य प्रान्तों की कामकाजी महिलाओं के लिए छात्रावास चलाये हैं। जगत्याल (आंध्र प्रदेश), नागपुर (महाराष्ट्र), बिलासपुर (मध्यप्रदेश) आदि में ऐसे छात्रावास हैं। हम लोगों ने अपने कुछ भवनों में लघु उद्योग भी शुरु किए हैं।

पूना में वृद्ध महिलाओं के लिए एक 'परिवार महिला निवास' प्रकल्प शुरु किया है। जालंधर में रहने वाली लद्दाख से आई बहिनों के लिए भी ऐसा ही प्रकल्प शुरु किया है। उनको वहाँ पढ़ाने की भी व्यवस्था है। शोलापुर में बच्चों को कई तरह के खेलों का प्रशिक्षण देने और उन्हें प्रतियोगिताओं में जाने लायक बनाने का काम शुरु किया गया है।

कुछ सेविकाएं 'स्वदेशी भण्डार' चलाती हैं। अहमदाबाद में आयुर्वेद की दवाई बनाने तथा आयुर्वेद–चिकित्सा करने का एक सेंटर है। कांकरिया में भी एक ऐसा केन्द्र है। इस तरह महिलाओं को संस्कार दे उनमें परिवर्तन तथा संस्कारित सेविकाओं द्वारा समाज में परिवर्तन,यही समिति की कार्य योजना है।

- महिलाओं के लिए विधानसभाओं, लोकसभा आदि में जो ३३ प्रतिशत आरक्षण देने की मांग चल रही है, उस संबंध में आपका क्या मत है ?

– समिति ने इस पर पहले ही विरोध दर्शाया है। हम यह मानते हैं कि महिलाओं का सामर्थ्य बढ़ाना आवश्यक है। अतः उनके लिए ३३ प्रतिशत मांगने की आवश्यकता नहीं है। महिलाओं को स्वयं में ही इतना समर्थ बनना चाहिए कि वो अपना हक स्वयं प्राप्त कर सकें।

- ताई जी, दूरदर्शन वगैरह में जो नारी छवि प्रदर्शित की जा रही है, उसके बारे में आपका क्या दृष्टिकोण है ?

इसके बारे में हम लोग शुरु से ही इसका विरोध कर रहे हैं। दूरदर्शन पर नारी की गलत छवि नहीं जानी चाहिए। इसके बारे में कई हजार हस्ताक्षर लेकर शासन को ज्ञापन भेजा था पर उसका असर नहीं हुआ। फिर भी यदि सब महिलाएं मिलकर विरोध करें तो उसका असर होगा, ऐसा हमारा सोचना है।

– राजस्थान की महिलाओं के लिए आशीर्वाद के रूप में आपका संदेश ?

– राजस्थान की महिलाएं खुद भी आगे बढ़ सकती हैं। उनमें कर्मशक्ति भी है और तेजस्विता भी। किन्तु उन्हें थोड़ा और मार्गदर्शन मिले तो वे और तेजी से आगे बढ़ सकती हैं। यहां की महिलाओं में जो गुण हैं यदि उनमें वे निपुण हो जाएंगी तो वे हर क्षेत्र में आगे बढ़ सकती हैं। उनकी मानसिकता ऐसी हो कि हम भी किसी से कुछ कम नहीं। ❑

अद्‌भुत भारत, महान् भारत

इंग्लैण्ड के इतिहासकार ए.एल.बाशम ने प्राचीन भारत के इतिहास और संस्कृति पर एक पुस्तक लिखी थी– 'द वण्डर देट वाज इण्डिया' (भारत जो अद्‌भुत था), जो १९५४ में प्रकाशित हुई। लगभग छह सौ पृष्ठों की इस पुस्तक में इतिहासकार बाशम ने अरबों के आक्रमण से पूर्व के भारत के इतिहास पर प्रकाश डाला है। उन्होंने यह बताया कि इस्लाम के आने के पहले भारत आध्यात्मिक रूप से एक महान् देश था। यहाँ की कला, संस्कृति धर्म और दर्शन अत्यंत श्रेष्ठ थे।

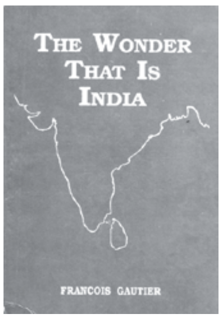

आर्थर बाशम ने भारत की संस्कृति को तो उत्कृष्ट माना, पर अधिकांश पश्चिमी इतिहासकारों और उनके भारतीय चाटुकारों ने तो लिखा है कि भारत के इतिहास में गौरव करने लायक कुछ है ही नहीं। महान्‌ता का बोध कराने वाला न तो कोई श्रेष्ठ महापुरुष भारत में जन्मा, न ही कोई यशस्वी राज्य या राजा भारत में हुआ। भारत के इतिहास को षड़यंत्रपूर्वक विकृत किया गया। ईसाई मिशनरियों और भारत के तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग ने भारत के गौरवशाली इतिहास को तथ्यों के विरूद्ध मनमाने तरीके से प्रस्तुत किया। कई कपोल–कल्पित मान्यताएं गढ़ी गई। इनमें सर्वप्रमुख तथा कतई निराधार सिद्धान्त आर्यों के भारत में आने और आर्यों द्वारा तथाकथित द्रविड़ों के दमन का है। 'ब्राह्मण–वाद का प्रभुत्व' ऐसा ही एक अन्य कपोल–कल्पित सिद्धान्त है। मुस्लिम आक्रान्ताओं के अत्याचारों और उनके भीषण नरसंहारों को नकार कर उनकी उदार छवि प्रस्तुत करना भी इसी षड़यंत्र का हिस्सा है। इन मिथ्या सिद्धान्तों ने देश में ऐसा वातावरण बना दिया है कि हमारी संस्कृति ही खतरे में पड़ गई है। इतिहासकार आर्थर बाशम ने ऐसा विकृत और अतिवादी प्रस्तुतीकरण तो नहीं किया पर यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि भारत प्राचीन काल में तो अद्‌भुत था पर अब दयनीय स्थिति में है।

फ्रांक्वाँ गोशे फ्रांस के निवासी हैं तथा जाने–माने पत्रकार हैं। फ्रांस के प्रमुख दैनिक 'ली–फिगारो' के वे पहले भारत और फिर सम्पूर्ण दक्षिण एशिया के संवाददाता रहे। सेवा–निवृत्ति के बाद अब वे भारत में ही बस गये हैं। आर्थर बाशम की पुस्तक के जवाब में उन्होंने भी एक पुस्तक लिखी– द वण्डर देट इज इण्डिया, अर्थात् भारत जो अद्‌भुत है। इसमें उन्होंने यह सिद्ध किया है कि भारत आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक रूप से न केवल महान् था बल्कि आज भी महानता से परिपूर्ण है। बस आवश्यकता इसे उजागर करने की है। भारत आज आतंरिक एवं बाहरी खतरों से जूझ रहा है। इस सबके बीच आवश्यकता भारत के जागने और अपने आप को पहचानने की है।

इस सारगर्भित पुस्तक के कुछ अंशों का प्रकाशन इस अंक से प्रारम्भ हो रहा है।

वर्तमान भारत के बारे में प्रचलित यथार्थ को समझाने के लिए पश्चिमी देशों के इतिहास का अवलोकन करना जरूरी है क्योंकि इन मान्यताओं के बीज वपन पश्चिमी विचारकों एवं इतिहासकारों ने ही किया है जो कालान्तर में पल्लवित होता हुआ एक विष वृक्ष के रूप में विकसित हो गया है। यह सर्व विदित है कि यूनान एवं रोम की सभ्यताओं के पतन के पश्चात यूरोप विभिन्न असभ्य जनजातियों में बिखर गया था और ये जन जातियाँ परस्पर एक दूसरे के विरुद्ध लड़ती रहती थीं। ईसा मसीह के आगमन के पश्चात पश्चिम की सभ्यताओं में चेतना विकसित हुई और ईसाईयत उसका रीढ़ स्तम्भ बन गया। यूरोपीय देशों स्पेन, पुर्तगाल, फ्रांस एवं इंग्लैण्ड में चली परस्पर उपनिवेश विस्तार की गला काट प्रतिस्पर्धा में इंग्लैण्ड सबसे आगे निकल कर अठारहवीं शताब्दी के आते–आते शिखर पर पहुँच गया।

पादरियों ने विनाश किया

बौद्धिक जगत का एक वर्ग मानता है कि ईसा आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिये भारत आये थे और उन पर बौद्ध धर्म के सिद्धांतों का व्यापक प्रभाव पड़ा। इस संसर्ग से उनमें प्रेम एवं करुणा के गुणों का अंकुरण हुआ एवं यूरोप में अब वे प्रेम एवं करुणा के अवतार के रूप में जाने जाने लगे। ईसाइयत में यह सहृदयता एवं सहानुभूति का समावेश बर्बरता एवं घुटन से जूझ रहे यूरोप के लिए ताजगी भरी हवा के झोंकों के समान था। दुराचार, महामारी, हिंसा से ग्रस्त यूरोप के लिए अब ईसाइयत के नये नैतिक मापदण्ड तैयार किये, यद्यपि ये मापदण्ड भी बौद्ध एवं भारतीय सनानत धर्म की तुलना में अत्यंत रूढ़िवादी एवं हठधर्मितापूर्ण थे।

ईसाइयत मानती है कि उनका ईश्वर ही सच्चा ईश्वर है। मिथ्या देवों का उपासक शेष विश्व अंधकार में आकण्ठ डूबा है। उन्होंने **व्हाइट मैन्स बर्डन** के नाम पर विश्व को आलोकित करने का दायित्व अपने कंधों पर लाद लिया। अब वे अपने रिलीजन को सैन्य बल के आधार पर अन्य समाजों पर थोपने लगे। ईसाई मिशनरियों के इन कुकृत्यों से मानवता को जो क्षति पहुँची है, उसका आकलन संभव नहीं है। दक्षिण अमेरिका में स्पेन के सैनिकों एवं पादरियों ने ईसा के नाम पर उस समय की एक महान् सभ्यता को पूर्ण रूप से नष्ट कर दिया। जहाँ–जहाँ

“ भारतीय सभ्यता के उद्गम एवं विकास के बारे में जिस दिन विश्व को यथार्थ का बोध होगा, इतिहास का पुनर्लेखन करना पड़ेगा। इस के परिणामस्वरूप यदि वैदिक सभ्यता न्यूनतम ईसा पूर्व ५००० वर्ष की भी मान ली जाती है तो यह मानना पड़ेगा कि इसने ईरान, ईराक एवं खाड़ी प्रदेशों सहित पूरे विश्व को प्रभावित किया होगा। ”

भी ईसाई पादरी गये वहां की सभ्यताओं को उन्होंने निर्ममता पूर्वक कुचल कर सदियों पुरानी उनकी सहज एवं सरल जीवन शैली को तहस–नहस कर दिया।

सुदृढ़ जीवन पद्धति

कुछ समय पूर्व पश्चिम ने ''नये विश्व के खोजी''कहे जाने वाले कोलम्बस की जयन्ती बड़ी धूमधाम से मनाई है। वस्तुतः यह ''खोजा गया नया विश्व'' इन असभ्य युवाओं की खोज से बहुत पहले से ही अपनी सभ्यता एवं संस्कृति की महक चारों ओर फैला रहा था। कोलम्बस में साहस, उत्साह के साथ–साथ निष्ठुरता एवं पाखण्ड भी कूट कूट कर भरा था। उसकी इस खोज ने मानव इतिहास में अनन्त शोषण का मार्ग प्रशस्त किया । दुर्भाग्य है कि न केवल पश्चिमी जगत अपितु पूरे विकासशील देशों में भी हम लोग घटनाओं एवं व्यक्तियों को उस चश्मे से देख रहे हैं जिसे शताब्दियों तक पश्चिमी विचारकों ने निर्मित किया है। जब तक हम उस विकृत चश्मे से घटनाओं एवं व्यक्तियों को देखना बन्द नहीं करेंगे, भारत एवं विश्व के यथार्थ को समझने में हम समर्थ नहीं होंगे।

ईसाई मिशनरियों के भारत आगमन के समय हिन्दुत्व की एक सुनियोजित एवं सुदृढ़ जीवन पद्धति थी। प्रारम्भ में ईसाई मिशनरियों को हिन्दू समाज के लोगों को ईसाई मत में मतान्तरित करने में बड़ी कठिनाई आई। किन्तु खूब माथा पच्ची के पश्चात् उन्होंने एक हथियार ढूँढ़ निकाला। वह था 'जनजाति एवं दलित शब्द'। उन्होंने बड़ी चालाकी से स्वास्थ्य एवं सेवा के आवरण तथा धनबल के प्रयोग से केरल , गोवा एवं उत्तर–पूर्वी भारत के अबोध लोगों को ईसाइयत में मतान्तरित कर दिया। उनके इस कुचक्र से जनजाति एवं हरिजनों को शेष समाज के विरुद्ध उकसाने में उन्हें अंशतः सफलता भी मिली।

प्रथम मिथ्या अवधारणा : आर्य बनाम द्रविड़

जब इससे भी उनके कुत्सित इरादे पूरे नहीं हुए तो उन्होंने इतिहास की एक नई अवधारणा गढ़ी। वह थी कि 'सभ्य, सुसंस्कृत एवं शांति प्रिय द्रविड़ों की एक समृद्ध भारतीय सभ्यता' (उदारहणतः मोहन जोड़दो)। ये श्याम वर्णी एवं शिव के उपासक थे। लगभग दो हजार ई.पू. निष्ठुर एवं बर्बर गौर वर्णी घुमन्तु आर्य काकेशस पर्वत श्रृंखला के निकट से भारत आये। इन खलनायकों ने पूरे भारत पर आधिपत्य कर लिया। द्रविड़ों को गुलाम बना कर जाति प्रथा के माध्यम से उन पर अपनी शाश्वत श्रेष्ठता थोप दी। इस खाई को अधिक गहरा करने के लिए उन्हें भड़काया कि वे आदिवासी जनजाति के लोग भारत के आर्यों के आने तथा द्रविड़ों के बसने से भी पूर्व यहाँ रहते थे। अतः वे ही भारत के मूल निवासी सच्चे भारतीय हैं।

इस प्रकार दो परस्पर विरोधी सभ्यताओं का सिद्धांत सृजित कर उन्होंने समाज को दो वर्गों में सदैव के लिए एक दूसरे के विरुद्ध खड़ा कर दिया। यह सिद्धांत आज भी प्रचलित एवं मान्य है तथा इसे भारतीय पाठ्यपुस्तकों में पढ़ा कर भावी पीढ़ियों को मानसिक रूप से प्रदूषित किया जा रहा है।

यद्यपि यह सिद्धांत एकांगी अनर्गल तथा अव्यावहारिक प्रतीत होता है तथापि पिछड़े वर्ग को भड़काने में मिशनरियों को न केवल इससे सफलता प्राप्त हुई बल्कि अंग्रेजों को उनकी 'फूट डालो और राज करो' की नीति को अग्रसर करने में बड़ी मदद मिली।

अब इस 'आर्यों के आगमन' सिद्धांत के विरुद्ध आवाजें उठने लगी हैं। वास्तव में ऐसे किसी आगमन के कोई पुरातात्विक साक्ष्य नहीं है। महर्षि अरविन्द के मतानुसार'' *यह कैसे संभव है कि एक विशाल देश जिसमें सभ्य एवं महान लोग रहते हैं को मुट्ठी भर असभ्य लोग बिना मानसिक एवं आध्यात्मिक प्रगति किये उन पर अपनी भाषा, धर्म एवं जीवन शैली थोप दें। यह चमत्कार तभी संभव है जब आक्रान्ता की अपनी स्वयं की सुव्यवस्थित भाषा, क्रियाशील जीवन पद्धति एवं प्रबल इच्छा शक्ति हो।*'' उन्होंने तमिल (जो द्रविड़ों की भाषा है) एवं संस्कृत (आर्य भाषा) की शब्द रचना में अद्भुत समानता के लक्षण पाये हैं।

विश्वव्यापी सभ्यता

इन्हीं सब तथ्यों पर विचार करने से श्री बाशम की आर्यों के आगमन की कपोल कल्पित अवधारणा आधारहीन बनने लगी है। अब विचारणीय यह है कि भारतीय सभ्यता के उद्गम एवं विकास के बारे में फैलाये गये मिथ्या सिद्धांत के यथार्थ को विश्व कब समझेगा? सच तो यह है कि जिस दिन उसे इस संबंध में यथार्थ का बोध हो जायेगा, इतिहास का पुनर्लेखन करना पड़ेगा। इस पुनर्लेखन के परिणाम स्वरूप यदि वैदिक सभ्यता न्यूनतम ५००० वर्ष ई.पू. की भी मान ली जाती है (जो वस्तुतः इससे भी अधिक पुरानी है।) तो यह मानना पड़ेगा कि इसने पूर्व–मुस्लिम काल में न केवल पड़ौसी ईरान, ईराक एवं खाड़ी प्रदेशों की सभ्यताओं को, अपितु पूरे विश्व को प्रभावित किया होगा। *(क्रमशः)*

–हरिशंकर भारद्वाज

रमन की सत्यनिष्ठा

उस समय विश्वविख्यात वैज्ञानिक चन्द्रशेखर वेंकट रमन रंगून में ब्रिटिश सरकार की नौकरी में थे। लेखपाल के पद पर कार्यरत रमन बहुत ही स्वाभिमानी व्यक्ति थे। उनमें देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। यदि उनका अंग्रेज अधिकारी कोई भी आदेश देता जो कि उनकी दृष्टि में तथा सामान्य रूप से अनुचित होता था तो वे निःस्संकोच उसे मानने से मना कर देते थे और नुकसान की परवाह भी नहीं करते थे। उन्होंने तय कर रखा था कि वे नौकरी ईमानदारी से समझौता करके नहीं करेंगे।

एक दिन एक अंग्रेज अधिकारी ने उन्हें अपने कमरे में बुलाया और कहा- ''एक बौद्ध नागरिक की भूमि को एक अंग्रेज के नाम करना है। तुम इसके लिए आवश्यक दस्तावेज बनवा दो और जल्दी से उन्हें मेरे सामने लेकर आओ।''

यह सुन कर रमन निर्भीकता से बोले-'' श्रीमान! मैं भगवान श्रीकृष्ण तथा उनकी गीता का उपासक हूँ। किसी की खून-पसीने से अर्जित की गई कमाई अथवा उसकी जायज जमीन को धोखाधड़ी से मैं किसी दूसरे के नाम करके अधर्म नहीं कर सकता। मेरी नजर में यह पाप है। मैं किसी भी हालत में ऐसा नहीं कर सकूंगा। अच्छा है कि आप भी इस पापकर्म को न करें। यह अधर्म है।''

यह सुनकर अंग्रेज अधिकारी को गुस्सा आ गया और बोला - ''नौकरी के अंतर्गत अधिकारी की आज्ञा मानना भी तुम्हारा धर्म है।''

इस पर रमन ने कहा-''श्रीमान्! यदि अधिकारी कोई गलत कार्य अथवा पाप कर्म करने को कहे तो उसकी अवहेलना करना भी धर्म है। मैं अपना धर्म निभा रहा हूँ।''

रमन की बात पर अधिकारी ने कहा-''यदि तुम्हें नौकरी करनी है तो जो मैं कहूंगा, वही करना पड़ेगा।''

रमन ने पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा-''मैं तुम्हारी बात नहीं, अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनूंगा और ईमानदारी का साथ दूँगा।'' इसके बाद उन्होंने तत्काल अपना त्यागपत्र अंग्रेज अधिकारी को सौंप दिया। अंग्रेज अधिकारी एक सच्चे भारतीय की निष्पक्षता और सत्य के प्रति निष्ठा को देख कर दंग रह गया।

शिक्षा- व्यक्ति को सदैव अपना कार्य ईमानदारी के साथ करना चाहिये।

पहचानो तो ये महापुरुष कौन हैं

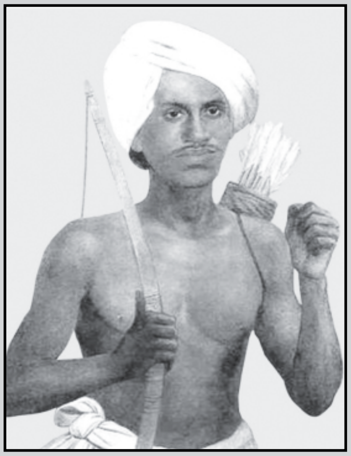

बाल मित्रों! यहाँ हमारे एक महापुरुष का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिये जा रहे हैं।

संकेत के आधार पर चित्र की पहचान करें और अपने ज्ञान की परीक्षा करें।

- इनका जन्म झारखण्ड में हुआ था।
- वनवासी इन्हें भगवान मानते हैं।
- इन्होंने वनवासियों में चेतना जगाकर अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया।
- ब्रिटिश सरकार ने षड्यंत्र पूर्वक कैदकर इनकी हत्या कर दी थी

(उत्तर इसी अंक में है)

बाल-प्रश्नोत्तरी

बाल मित्रो! इस अंक में रामायण से संबंधित दस प्रश्न पूछे जा रहे हैं। प्रश्नों के उत्तर चार विकल्पों में दिये गये है जिनमें से एक उत्तर सही है। इस उत्तर को ढूंढ़ो और अपने सामान्य ज्ञान की परीक्षा लो।

१. मंथरा किसकी दासी थी?
(अ) कौशल्या (ब) सुमित्रा (स) कैकेयी (द) सुनयना

२. राजा दशरथ की मृत्यु के समय भरत कहाँ थे?
(अ) ननिहाल (ब) गुरुकुल (स) वन में (द) तीर्थाटन पर

३. भगवान राम को कितने वर्ष का वनवास मिला?
(अ) ११ वर्ष (ब) १२ वर्ष (स) १३ वर्ष (द) १४ वर्ष

४. लक्ष्मण जी की धर्मपत्नी कौन थीं?
(अ) माण्डवी (ब) उर्मिला (स) श्रुतकीर्ति (द) गार्गी

५. सत्यवादी राजा के रूप में कौन प्रसिद्ध है?
(अ) हरिश्चन्द्र (ब) रंतिदेव (स) दिलीप (द) शुद्धोधन

६. साकेत किस नगरी का दूसरा नाम है?
(अ) मथुरा (ब) अयोध्या (स) काशी (द) उज्जैन

७. भगवान श्रीराम की पादुका को सिंहासन पर रख कर किसने शासन किया?
(अ) शत्रुघ्न (ब) भरत (स) सुमन्त (द) जनक

८. सीताजी की माता का नाम क्या था?
(अ) सुनयना (ब) मैना (स) गौतमी (द) अरून्धति

९. सोने का मृग बन कर माता सीता को आकर्षित करने कौन आया था?
(अ) मारीच (ब) मयदानव (स) खर (द) दूषण

१०. विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करते समय श्रीराम ने किस राक्षसी का वध किया?
(अ) त्रिजटा (ब) लंकिनी (स) ताड़का (द) हिडिम्बा

(उत्तर इसी अंक में हैं)

कामरेडों की हठधर्मी

भागवत जी के तिरंगा फहराने पर ही रोक लगा दी

भारत में असहिष्णुता बढ़ने का शोर मचाने वालों में कामरेड सबसे आगे हैं। सचाई यह है कि पूरे विश्व के इतिहास में वामपंथियों से बड़ा असहिष्णु और तानाशाह कोई दूसरा नहीं हुआ। क्रूरता, दमन, अन्याय और अत्याचार के मामले में कामरेडों ने हिटलर और नाजियों को कोसों पीछे छोड़ दिया है। रूस, चीन, क्यूबा तथा पूर्व यूरोपीय देशों के नरसंहार इसके प्रमाण हैं। भारत में भी लोगों ने साम्यवादी दमन और अत्याचार भुगता है। अपने विरोधियों को कामरेड कतई सहन नहीं कर पाते। केरल में इसीलिये स्वयंसेवकों की आये दिन हत्याएं हो रही हैं।

वाममार्गियों की घोर असहिष्णुता और छिछोर-बुद्धि का एक और प्रमाण गत १५ अगस्त को सामने आया। सरसंघचालक भागवत जी दो दिनों की केरल यात्रा पर थे। पलक्कड़ के 'कारनेगी अम्मन स्कूल' ने उन्हें स्वतंत्रता दिवस पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिये आमंत्रित किया। यह समाचार मिलते ही केरल की वाममार्गी सरकार ने भागवत जी के तिरंफा फहराने पर रोक लगा दी। पलक्कड़ के जिलाधीश पी.मेरीकुट्टी ने स्कूल प्रशासन को आदेश भी दे दिया कि भागवत जी को आमंत्रित न करें।

देश में प्रत्येक व्यक्ति को राष्ट्रीय ध्वज फहराने का अधिकार है और इसलिये भागवत जी ने कारनेगी स्कूल में ठीक समय पर जा कर भारत की शान तिरंगा फहरा दिया। अब वाममार्गी खिसिया रहे हैं।

सर्वोच्च न्यायालय ने लव जिहाद की जाँच के आदेश दिये

गत १६ अगस्त को उच्चतम न्यायालय ने 'राष्ट्रीय अन्वेषण एजेंसी'(एन आई ए) को लव जिहाद के मामलों की गहराई से छान-बीन करने के आदेश दिये हैं। मुख्य न्यायाधीश श्री जे.एस.खेहर तथा न्यायमूर्ति चन्द्रचूड़ की पीठ ने शफीन-अखिला मामले में उक्त आदेश दिया है। सम्पूर्ण जाँच न्यायमूर्ति रवीन्द्रन की देखरेख में होगी।

आरोप है कि केरल में शफीन ने अखिला अशोकन को अपने जाल में फँसा कर उसे मुसलमान बनाया और फिर उससे विवाह कर लिया। केरल में उच्च न्यायालय ने इसे लव-जिहाद का मामला मानते हुए दोनों का निकाह निरस्त कर दिया था। इस पर शफीन ने सर्वोच्च न्यायालय में अपील की। श्री कपिल सिब्बल तथा श्रीमती इन्दिरा जयसिंह ने शफीन की ओर से दलीलें प्रस्तुत की। न्यायालय ने सभी दलीलों को अमान्य करते हुए रा.अ.ए. से पूरे मामले की जाँच करने को कहा है। खण्ड-पीठ ने कहा कि मुसलमान बना कर निकाह करने के कई मामले सामने आये हैं। इसलिये जाँच होनी चाहिये कि ये मामले किसी षड़यंत्र का हिस्सा तो नहीं है।

कश्मीर में हवा तेजी से बदल रही है

सुरक्षा बलों की सख्ती और प्रशासन की चुस्ती से कश्मीर की स्थिति तेजी से बदल रही है। राज्य में कुल २२ जिले हैं, जिनमें से आधे कश्मीर घाटी में हैं। उनमें से भी कुल चार जिले हैं जहाँ आतंकियों-अलगाववादियों का प्रभाव है। इन चार जिलों में भी कुछ ही स्थानों पर भारत विरोधी सक्रिय हैं। अब इन स्थानों पर भी स्थितियाँ बदल रही हैं।

अंग्रेजी दैनिक 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' (२२अग.) के अनुसार राज्य के शोपियाँ जिले में २१ अगस्त को पूर्ण हड़ताल रही। पूरे जिले में इसके पहले इतनी सफल हड़ताल पहले कभी नहीं हुई। आश्चर्य की बात यह है कि यह हड़ताल आतंकवादियों के **विरोध** में हुई। स्वतंत्रता दिवस, १५ अगस्त के बाद तीन दिनों में जिहादियों ने शोपियाँ के तीन लोगों को मार दिया। इससे आम जनता में आक्रोश फैल गया और आतंकियों की हिंसा के विरोध में २१ अगस्त को जनता ने जिले में 'बन्द' रखा।

जिहादियों के हाथों मरने वालों में एक सत्ताधीन पीडीपी का कार्यकर्ता भी था। सुरक्षा बलों के विरोध में हड़ताल करने वालों ने पहली बार आतंकियों के खिलाफ आन्दोलन किया।

सुमना सरकार की व्यथा कौन सुनेगा

सुमना सरकार का एक-मात्र दोष यह है कि वह सेकुलर बिरादरी की या अल्पसंख्यक समुदाय की नहीं है। इसलिये उसकी व्यथा कोई नहीं सुन रहा। उसके समर्थन में न तो कोई जन्तर-मन्तर पर मुँह पर पट्टियाँ बांध धरना दे रहा है, न कोई हाथों में तख्तियाँ लिये चौराहों पर खड़ा हो रहा है।

सुमना सरकार प.बंगाल के बदुरिया की रहने वाली है। गत ४ जुलाई को सौविक सरकार नाम के कक्षा ११ के एक छात्र ने फेसबुक पर एक टिप्पणी लिखी। उससे जिहादी नाराज हो गये और एक सप्ताह तक उन्होंने बदुरिया, बशीरहाट तथा आस-पास के क्षेत्रों में हिंसा का ताण्डव मचा दिया। पुलिस को अब यह पता चला है कि सौविक सरकार के फेसबुक खाते का 'पासवर्ड' चुरा कर किसी उपद्रवी ने उक्त टिप्पणी की थी।

सौविक सरकार अपने चाचा बबलू सरकार के घर पर रहता था तथा सुमना उसकी चचेरी बहन है। दंगाइयों ने बबलू सरकार का घर आग के हवाले कर दिया। तभी से यह परिवार अपनी सुरक्षा के भय से भटकता फिर रहा है। एम.ए.उत्तरार्द्ध की छात्रा सुमना सरकार उस रात को उनका घर जलाये जाने की घटना को आज भी नहीं भुला पाई है।

एक पत्रकार ने छिप-छिपा कर किसी प्रकार सुमना से बात की। सुमना ने बताया कि अक्सर रात के समय वह अकस्मात जाग जाती है तथा भय के कारण सो नहीं पाती। उसकी पढ़ाई तो पहले ही मिट्टी में मिल चुकी है। उसने सहमते हुए बताया कि उस रात हजारों की भीड़ ने उनका घर घेर लिया था और बड़ी मुश्किल से वेश बदलकर वे घर से निकल पाये।

महिला आजादी के नारेबाजों को सुमना सरकार को भी सुरक्षा देनी चाहिये।

चीनी सरकार ने नोबुल विजेता की पत्नी को जेल भेजा

भारत के वाममार्गियों के लिये चीन मातृभू-पितृभू है। पहले यह सम्मान रूस को भी मिला हुआ था। रूस में जब बरसात होती थी तो कामरेड भारत में छतरी निकाल कर तान लेते थे। उनके घरों, कार्यालयों में मार्क्स, माओ, लेनिन, स्तालिन के ही चित्र और मूर्तियाँ मिलेंगे। मार्क्सवादी पार्टी ने तो १९६२ के चीनी आक्रमण के समय चीनी सेना को मुक्तिवाहिनी बता कर बाकायदा उसका स्वागत किया था। इसी मुद्दे पर साम्यवादी दल के दो टुकड़े हुए- चीन समर्थक मार्क्सवादी पार्टी (CPM) तथा रूस समर्थक भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (CPI)।

कामरडों की प्रेरणा स्थली चीन में विचारों की आजादी का ऐसा दमन होता है कि नोबुल पुरस्कार विजेता **लिउ जियाबो** को पूरे जीवन जेल में रहना पड़ा। जुलाई के प्रारम्भ में जेल में ही शांति के लिये नोबुल पुरस्कार प्राप्त करने वाले लिउ जियाबो का निधन हो गया। अब उनकी विधवा पत्नी भी गायब हैं। ५६ वर्ष की लिउ जिया एक अच्छी कवियित्री हैं। १६ जुलाई को उनके पति का अंतिम संस्कार किया गया था। उसी दिन चीनी सरकार ने उनको किसी अज्ञात स्थान पर जेल में बन्द कर दिया। उनके वकील ने चीनी सरकार से लिउ जिया को रिहा करने की प्रार्थना की है। संवाद एजेंसी ए एफ पी के अनुसार वकील जेयर्ड गेंसर ने संयुक्त राष्ट्र संघ से भी लिउ जिया को बचाने का अनुरोध किया है। इससे पता चलता है कि कामरेड बिरादरी कितनी असहिष्णु है।

अफ्रीका से यूरोप तक जिहादियों का आतंक

अफ्रीका से यूरोप तक पूरी दुनिया में जिहादी शांतिप्रिय और निर्दोष लोगों को हिंसा का शिकार बना रहे हैं। उदारवादी विचारधाराओं का अनुचित लाभ उठाते हुए इस्लाम के नाम पर आतंकी गिरोह तमाम देशों की सुरक्षा व्यवस्था में सेंध लगा रहे हैं। पिछले कुछ दिनों में जिहादियों ने स्पेन, जर्मनी, बर्किना फासो, अफगानिस्तान आदि में आतंकी कार्रवाइयाँ कीं।

गत १७ अगस्त को स्पेन के प्रमुख नगर बार्सीलोना में जिहादियों ने एक वेन भीड़ पर चढ़ा दी। नगर के प्रमुख चौक 'लास राब्लास' में उस समय काफी लोग खरीददारी कर रहे थे। इस क्रूर कृत्य में १३ लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। स्थानीय पुलिस के अनुसार जिहादी कोई भीषण वारदात करना चाहते थे। उक्त वारदात के बाद सुरक्षा बलों ने आतंकियों के ठिकानों पर छापे मारे तो भारी मात्रा में विस्फोटक पुलिस को मिले।

इस घटना के तीन दिन पहले १४ अगस्त को **बर्किना फासो** के एक रेस्तराँ पर आतंकियों ने हमला कर १८ लोगों को गोलियों से भून दिया। बर्किना फासो अफ्रीका के पश्चिम में दो करोड़ की जनसंख्या वाला मुस्लिम देश है। माली, घाना तथा आइवरी कोस्ट के बीच में यह बसा है। १४ अगस्त की रात राजधानी **ओगाडूगू** के एक रेस्तरां में दो बन्दूकधारी घुसे और गोलियाँ बरसाना शुरु कर दिया। बाद में दोनों आतंकी मार दिये गये। इसी प्रकार जुलाई के अंत के दिनों में हेम्बर्ग (जर्मनी) के एक सुपर बाजार में चाकूबाज आतंकी ने कई लोगों को घायल कर दिया। घायलों में से एक ने कुछ समय बाद ही दम तोड़ दिया। शुक्रवार २५ अगस्त को अफगानिस्तान की राजधानी में आतंकियों ने एक शिया मस्जिद पर हमला कर १३ लोगों को मार दिया।

प्रसिद्ध नन्दा देवी यात्रा गत २० अगस्त को जयपुर पहुँची। उत्तराखण्ड के कुरुड (चमोली) से शुरु हुई यह यात्रा कई राज्यों का भ्रमण कर पिथौरागढ़ में समाप्त होगी। उत्तराखण्ड में बारह सालों में एक बार नन्दादेवी की यात्रा होती है जिसे 'नन्दा राज-जात' कहा जाता है।

पाक अधिकृत कश्मीर में आजादी का आन्दोलन

हमारे कश्मीर के अलगाववादी कश्मीर घाटी में पाक झण्डे लहराते हैं, पाकिस्तान का राष्ट्रगीत गाते हैं और कश्मीर को पाकिस्तान के हवाले कर देने की आवाज उठाते हैं। उधर पाकिस्तान के अवैध अधिकार वाले कश्मीर में लोग पाकिस्तान से दुखी हैं। वहाँ आये दिन पाकिस्तान के विरोध में प्रदर्शन होते रहते हैं और जिहादियों से आजादी की माँग जोरदार तरीके से उठ रही है।

अंग्रेजी दैनिक डीएनए (२०अग.) के अनुसार गत १६ अगस्त को 'जम्मू-कश्मीर (पाक अधिकृत) नेशनल स्टूडेण्ट फेडरेशन' ने जन्दाली में पाकिस्तान सरकार के खिलाफ विशाल प्रदर्शन किया। प्रदर्शन में भाग ले रहे स्थानीय नेता लियाकत खान ने पत्रकारों को बताया कि आतंकियों ने पाक-अधिकृत कश्मीर में लोगों का जीना मुश्किल कर रखा है। एक अन्य नेता तैफूर अकबर ने कहा कि कश्मीरियों से गुलामों जैसा व्यवहार किया जा रहा है। पकिस्तानी सेना भी वहाँ रहने वालों पर अत्याचार करती है।

चालीस हजार रोहिंग्या देश से निकाले जायेंगे

केन्द्र सरकार ने भारत में गैर कानूनी रूप से रह रहे रोहिंग्या मुसलमानों को पुनः म्यांमार भेजने का निर्णय किया है। उधर जयपुर में रह रहे रोहिंग्याओं ने कहा है कि वे किसी भी हालत में भारत से बाहर नहीं जायेंगे।

रोहिंग्या मुसलमान पड़ौसी म्यांमार (ब्रह्मदेश) के रहने वाले हैं। अन्य देशों की तरह म्यांमार में भी इन्होंने उपद्रव किये और वहाँ के लोगों के साथ हिंसा शुरु कर दी। इस पर बर्मीज लोगों ने संगठित हो कर रोहिंग्याओं को सबक सिखाना प्रारम्भ कर दिया। वहाँ की सरकार भी सेकुलरवादी नहीं हैं अतः प्रशासन ने भी सख्ती की। फलस्वरूप बड़ी संख्या में ये लोग म्यांमार से भाग निकले। पहले तो ये बांग्लादेश की ओर गये, लेकिन वहाँ एक भी रोहिंग्या को नहीं घुसने दिया गया। फिर उनको लगा कि घुसपैठियों का स्वर्ग भारत ही है अतः वे भारत की ओर आये। उस समय केन्द्र में डा.मनमोहन सिंह की सरकार थी। इसलिये पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आइ. एस.आई की सहायता से ये सीमा पार कर भारत में घुस आये।

भारत में रह रहे बांग्लादेशी घुसपैठियों ने रोहिंग्या मुसलमानों को यहाँ बसने में सहायता की। जम्मू को मुस्लिम बहुल बनाने के उद्देश्य से जिहादियों ने बड़ी संख्या में इनको बसा दिया। जयपुर में भी आगरा रोड के आस–पास रोहिंग्या बस गये हैं तथा कानून–व्यवस्था के लिये ये बड़ी समस्या बन रहे हैं।

वरिष्ठ प्रचारक धनप्रकाश जी सम्मानित

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वयोवृद्ध प्रचारक धनप्रकाश जी को गत ६ अगस्त को जयपुर में सम्मानित किया गया। 'स्व. ललित किशोर चतुर्वेदी स्मृति समिति' ने मानसरोवर, जयपुर स्थित संस्कृति कॉलेज में आयोजित एक समारोह में उन्हें देश और समाज के लिये की गई सेवा हेतु सम्मानित किया। संघ और भाजपा के वरिष्ठ कार्यकर्ता रहे स्व.ललित किशोर जी के जन्म दिन पर समाज को मूल्यवान सेवा देने वालों का सम्मान किया गया था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पद्म विभूषण डा.मुरली मनोहर जोशी तथा अध्यक्ष श्री दाती महाराज थे।

आयु के सौवें वर्ष में चल रहे धनप्रकाश जी गत ७५ वर्षों से संघ के प्रचारक हैं। राजस्थान में कई वर्षों तक हिन्दू संगठन का कार्य करने के पश्चात् वे भारतीय मजदूर संघ के राजस्थान के संगठन मंत्री बनाये गये। तीस से अधिक वर्षों से उन्होंने भामस को राजस्थान का अग्रणी श्रम संगठन बना दिया। आज भी वे पूर्ण रूप से स्वस्थ एवं सक्रिय हैं।

समारोह में वरिष्ठ पत्रकार श्री श्याम आचार्य, समाज सेवी श्री दामोदर मोदी, प्रशासनिक सेवा के पूर्व अधिकारी श्री श्याम सुन्दर बिस्सा को भी सम्मानित किया गया।

तुष्टीकरण का चमत्कार

दिल्ली के प्रोफेसर को बंगाल सरकार ने आरोपी बनाया

बंगाल की सेकुलरवादी सरकार ने तुष्टीकरण की सारी सीमाएं पार करते हुए दिल्ली विश्व वि. के प्रोफेसर राकेश सिन्हा पर एक मुकदमा ठोक दिया। बशीरहाट की जिहादी हिंसा की आलोचना से घबराई राज्य सरकार ने प्रो.राकेश सिन्हा के अतिरिक्त मैसूर और हैदराबाद के भाजपा सांसदों तथा दिल्ली भाजपा की प्रवक्ता नुपुर शर्मा पर साम्प्रदायिकता भड़काने का आरोप लगा कर कोलकाता में प्राथमिकी दर्ज करा दी।

प्राथमिकी किसी मनोज कुमार सिंह ने दर्ज कराई है और उसमें कहा गया है कि उक्त सभी आरोपियों ने फेसबुक पर साम्प्रदायिकता भड़काने वाले संदेश डाले। डा.राकेश सिन्हा ने इन आरोपों को आधार हीन तथा हास्यास्पद बताया है और कहा कि वर्तमान बंगाल सरकार मार्क्सवादियों से भी अधिक दमन का सहारा ले रही है।

जब बंगाल से बाहर की यह स्थिति है तो बंगाल में रह कर तृणमूल कांग्रेस का विरोध करने वालों का क्या हाल होगा, अनुमान लगाया जा सकता है।

अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी के विद्वानों ने कहा –

महाभारत कोरी कल्पना नहीं बल्कि इतिहास है

महाभारत और रामायण भारत के लोगों के मन में बसे हुए हैं। महाभारत को तो पाँचवा वेद कहा जाता है और 'राम' नाम प्रातः जागरण से रात्रि विश्राम तथा जन्म से मृत्यु तक व्यक्ति के साथ रहता है। सेकुलरवादी विचारक उक्त दोनों ग्रन्थों को काल्पनिक बताते हैं और इन्हें मात्र साहित्यिक कृति मानते हैं। वास्तव में दोनों ही भारत के इतिहास का दिग्दर्शन करने वाले महाग्रन्थ हैं।

पिछले दिनों यही प्रमाणित करने के लिये दिल्ली के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में एक अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी हुई। द्रौपदी ड्रीम ट्रस्ट की इस गोष्ठी में देश विदेश के अनेक विद्वान सम्मिलित हुए। तीन दिनों के इस विचार विनिमय को ***महाभारत मन्थन*** *नाम दिया गया था। जाने माने पुरातत्ववेत्ता प्रो.बी.बी.लाल, बी.आर.मणि, इतिहासकार डा.एस के हरि, डा.हेमा हरि, डा.मोहन गुप्ता, डा. नलिनी राव, डा.बी.के.वी.शास्त्री बेल्जियम के विद्वान डा.कोनरेड एल्स्ट फ्रांस के प्रो. एलेक्स पेंचर्ड सहित सभी विद्वानों ने महाभारत की ऐतिहासिकता सिद्ध की।*

महाभारत मन्थन के आयोजकों ने ***'द्वापर युग की यात्रा'*** *नाम की एक प्रदर्शनी भी लगाई। इसमें महाभारत का इतिहास बताने वाले नक्शे एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेज प्रदर्शित किये गये थे। महाभारत काल के वृहत्तर भारत के विभिन्न राज्यों गांधार, पांचाल, हस्तिनापुर, इन्द्रप्रस्थ, प्राग्जोतिषपुर आदि को प्रदर्शित करने वाला मानचित्र विशेष आकर्षण का केन्द्र बना। द्रोपदी ड्रीम ट्रस्ट कई वर्षों से महाभारत में वर्णित स्थानों को खोजने और उन्हें चिन्हित करने में जुटा हुआ है।*

जयपुर में ५१ संस्कृत संभाषण शिविर आयोजित हुए

संस्कृत भाषा को आमजन की भाषा में लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से 'संस्कृत भारती' समय-समय पर 'संस्कृत संभाषण शिविरों' का आयोजन करती है। ऐसे ही शिविरों का गत ४ अगस्त को जयपुर के विभिन्न शिक्षण संस्थानों में शुभारम्भ हुआ।

कुल ५१ संस्कृत संभाषण शिविर नगर में लगाये गये। इनमें १५०० शिविरार्थियों ने सरल पद्धति से संस्कृत बोलने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसके साथ ही छात्रों में संस्कृत की रोचकता और लोकप्रियता बढ़े इसके लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया।

सभी शिविरों का समापन गत ११ अगस्त को मानसरोवर स्थित राधे रानी पार्क में हुआ। इस अवसर पर संस्कृत भारती के अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख श्री नंद कुमार उपस्थित थे। समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्कृत भारती, जयपुर प्रांत के अध्यक्ष श्री हरिशंकर भारद्वाज ने की। समारोह में प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले शिक्षार्थियों को पुरस्कृत भी किया गया।

'धारा ३७० एवं राष्ट्रीय एकता' पर हुई गोष्ठी

गत २० अगस्त को उदयपुर के विश्व संवाद केन्द्र तथा प्रज्ञा-प्रवाह के संयुक्त तत्वावधान में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्व संवाद केन्द्र के सभागार में आयोजित इस गोष्ठी का विषय 'अनुच्छेद ३७० एवं राष्ट्रीय एकता' था।

उक्त विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुये विद्या भारती के प्रांतीय मंत्री श्री सुरेन्द्र सिंह राव ने कहा कि धारा ३७० भारत की एकता और अखण्डता के लिये खतरा बनी हुई है। कार्यक्रम में विशिष्ठ अतिथि श्री रमेश शुक्ल थे। उन्होंने डा.श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान को व्यर्थ न जाने देने का आह्वान किया और धारा ३७० के उन्मूलन की आवश्यकता बताई।

उत्तर बाल प्रश्नोत्तरी – *१.स, २.अ, ३. द, ४.ब, ५.अ, ६. ब, ७.ब, ८.अ, ९.अ,१०. स*

जोधपुर में स्वदेशी जागरण मंच की गोष्ठी

गत १४ अगस्त को स्वदेशी जागरण मंच की जोधपुर इकाई की ओर से एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम स्थानीय 'इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियर्स' के सभागार में रखा गया था। गोष्ठी का विषय 'चीन का विकास मॉडल का भारतीय दृष्टिकोण से आंकलन' था। इस विषय पर मुख्य वक्ता श्री भगवती प्रकाश शर्मा, स्वदेशी जागरण मंच सहसंयोजक तथा पेसेफिक विश्वविद्यालय के कुलपति थे। उन्होंने भारत सरकार एवं आम जनता से चीन का सामान न खरीदने का आग्रह किया। उन्होंने यह भी कहा कि विश्व में भारत की छवि को बेहतर रखने एवं आर्थिक हितों को संवारने हेतु लघु उद्योगों एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.आर.पी. सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये चीन से भारत की अर्थव्यवस्था, सामरिक क्षेत्र में हो रहे खतरों से भी अवगत कराया।

पंचांग- आश्विन (कृष्ण पक्ष)

युगाब्द-५११९, विक्रमी-२०७४, शाके-१९३९

(७ से २० सितम्बर २०१७ तक)

चतुर्थी का श्राद्ध, चतुर्थी व्रत- ९ सितम्बर (पंचक-प्रातः ११.४३ तक), **रोहिणी व्रत (जैन)-** १२ सित., **प्रदोष** -१७ सित. ,**पितृकार्य अमावस्या,सर्वपितृ श्राद्ध -** १९ सित., **देवकार्य अमावस्या-**२० सित. (मातामह श्राद्ध)

चन्द्रमा - ७ सितम्बर **कुंभ** राशि में, ८-९ सित. **मीन**, १०-११ को **मेष**, १२-१३ को उच्च की राशि **वृष** में, १४-१५ **मिथुन**, १६-१७ स्वराशि **कर्क** में, १८-१९ **सिंह** तथा २० सितम्बर को **कन्या** राशि में गोचर करेंगे।

ग्रहों की स्थिति

आश्विन (कृष्ण पक्ष) में **शनि** पूर्ववत वृश्चिक में तथा **बुध** व **मंगल** सिंह राशि में रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** तथा **केतु** भी पूर्ववत कर्क तथा मकर में रहेंगे। **गुरु** १२ सितम्बर को प्रातः ६.५० बजे कन्या से तुला में तथा **सूर्य देव** १६ सितम्बर को रात १२.४१ बजे सिंह से कन्या में प्रवेश करेंगे। **शुक्र १५** सितम्बर को प्रातः १०.३१ बजे कर्क से सिंह राशि में प्रवेश करेंगे।

ओसियां में स्वदेशी चेतना रैली का आयोजन

गत २१ अगस्त को ओसियां कस्बे में 'स्वदेशी चेतना रैली' का आयोजन किया गया। रैली का आयोजन स्वदेशी सुरक्षा अभियान के अंतर्गत 'स्वदेशी जागरण मंच' की जोधपुर इकाई की ओर से किया गया था। जोधपुर प्रांत प्रचारक श्री चन्द्रशेखर ने रैली को सम्बोधित करते किया और कहा कि चीन अन्तर्राष्ट्रीय मानवता के लिए खतरा बनता जा रहा है। इसलिए चीन के सामान का बहिष्कार अनिवार्य रूप से करना होगा। इस चेतना रैली में श्री गोपाल परिहार, उपखण्ड अधिकारी, ओसियां तथा स्थानीय विधायक श्री भैराराम सियोल भी मौजूद थे। बाद में ६ हजार से अधिक छात्र-छात्राओं को स्वदेशी अपनाने का संकल्प भी दिलवाया।

स्वतंत्रता दिवस पर घोष का प्रदर्शन

गत १५ अगस्त को उदयपुर के स्वयंसेवकों ने स्थानीय फतहसागर की पाल पर घोष वादन प्रस्तुत किया। स्वतंन्त्रता दिवस के पावन अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में संघ के क्षेत्रीय प्रचारक श्री दुर्गादास भी उपस्थित थे। अध्यक्षता वीर चक्र विजेता श्री दुर्गाशंकर पालीवाल ने की।

उत्तर संस्कृति प्रश्नोत्तरी : अपनी मुद्रिका, १८ अक्षौणिह, वियेतनाम, देवी अम्बिका, समर्थ गुरु रामदास, स्वामी विद्यारण्य (भगवान कालमुख विद्याशंकर), केरल (अर्णामुना), सन्यासियों ने, महाराणा जैत्र सिंह, यादव राव जोशी।

जीवनोपयोगी स्वास्थ्यवर्द्धक सूत्र

हमारा शरीर सदैव स्वस्थ रहे इसके लिए यह जरूरी है कि हम हमारे रहन–सहन, खान–पान, आचार–विचार पर निरंतर ध्यान दें। जीवन में ये सभी तत्व संयमित नहीं होंगे तो शरीर निश्चित रूप से अस्वस्थ होगा। इसीलिए इस बार हम अपने पाठकों को कुछ ऐसे सूत्र बता रहे हैं, जिन्हें अपनाकर कई प्रकार की परेशानियों से बचा जा सकता है।

– सुबह उठते ही तीन से चार गिलास पानी पीना चाहिये, यदि पानी ताँबे के बरतन में रखा हुआ हो तो अधिक लाभप्रद होगा। ऐसा करने से पेट साफ होता है और कब्ज की शिकायत नहीं होती। पानी बैठकर धीरे–धीरे पीना चाहिये।

– प्रतिदिन मुँह में पानी भर कर ताजे ठंडे पानी से आँखों में छींटे लगायें। इससे आँखें स्वस्थ रहती हैं। ऐसा दिन में चार–पाँच बार कर सकते हैं।

– सामान्य नमक में सरसों का तेल मिलाकर दाँत और मसूड़ों की मालिश करनी चाहिये। इससे दाँत मजबूत होते हैं।

– नियमित सुबह टहलने से सम्पूर्ण शरीर की मांसपेशियाँ सक्रिय हो जाती हैं, रक्त संचार बढ़ता है, शरीर में चुस्ती–फुर्ती आती है, धमनियों में रक्त के थक्के नहीं बनते तथा हृदयरोग, मधुमेह और ब्लडप्रेशर में भी लाभ पहुँचता है।

– सुबह–सुबह हरी दूब पर नंगे पाँव टहलना भी काफी लाभप्रद है। पृथ्वी के सम्पर्क से कई रोगों की चिकित्सा स्वतः हो जाती है। नेत्र रोग में यह बहुत कारगर उपाय है।

– प्रतिदिन नियमित रूप से व्यायाम करें। सप्ताह में कम–से–कम एक बार पूरे शरीर की तेल से मालिश अवश्य करें।

– प्रौढावस्था शुरु होते ही चावल, नमक, घी, आलू और तली–भुनी चीजें खाना कम कर देना चाहिये। गाय का बिलोया हुआ शुद्ध घी खा सकते हैं।

– भोजन के प्रारम्भ और अन्त में जल न पियें। बीच में दो–तीन घूँट पानी पी सकते हैं। भोजन के एक घंटे बाद पानी पीना स्वास्थ्य के लिए उत्तम है।

– भोजन के बाद दाँतों को अच्छी तरह से साफ करें, अन्यथा अन्नकणों के लगे रहने से उनमें सड़न पैदा होगी तथा रोग उत्पन्न होने की संभावना रहती है।

– भोजन के पश्चात् दिन में बायीं करवट लेकर थोड़ा विश्राम करना तथा रात में टहलना अच्छा रहता है।

– भोजन करने के बाद लघुशंका अवश्य करनी चाहिये। इससे गुर्दे स्वस्थ रहते हैं। लघुशंका सदैव बैठकर करनी चाहिये।

– प्रतिदिन चार–पाँच तुलसी की पत्तियों के सेवन से ज्वर आदि रोग नहीं होते। तुलसी के पत्तों को दाँतों से नहीं चबाना चाहिये।

– देर रात तक जागना या सुबह देर तक सोते रहना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।

– रात्रि का भोजन सोने से तीन घंटे पहले करना चाहिये। शयन से एक घण्टे पूर्व गुनगुना दूध ले सकते हैं।

छेद उसी में कर डाला

ओ हामिद अंसारी बोलो, ये जुमला क्यों बोल गये।
जाते जाते सद्भावों में, ज़हर बता क्यों घोल गये।।

बैठ वहां ऊंचे मकान में, व्यर्थ आप चिल्लाते हैं,
गांवों की दर असल हक़ीक़त, हम तुमको बतलाते हैं।
शस्य श्यामला इस धरती के जैसा कोई और नहीं,
भारत माता की गोदी से प्यारी कोई ठोर नहीं।।

घर से बाहर ज़रा निकल के अकल खुजाकर के पूछो,
हम कितने हैं यहां सुरक्षित हमसे आकर के पूछो।
पूछो हमसे ग़ैर मुल्क में मुस्लिम कैसे जीते हैं,
पाक़,सीरिया,फिलस्तीन में, ख़ूं के आंसू पीते हैं।।

लेबनान,टर्की,इराक़ में भीषण हाहाकार हुए,
अल बगदादी के हाथों, मस्जिद में नर संहार हुए।
इज़राइल की गली गली में मुस्लिम मारा जाता है,
अफ़ग़ानी सड़कों पर ज़िंदा शीश उतारा जाता है।।

केवल भारत देश, जहां सिर गौरव से तन जाता है,
यही मुल्क है जहां मुसलमां राष्ट्रपति बन जाता है।
इसीलिए कहता हूं तुमसे, यों भड़काना बंद करो,
साक्ष्य हीन ऐसे जुमलों से, हमें लड़ाना बंद करो।।

बंद करो नफ़रत की स्याही से लिक्खी पर्चेबाजी,
बंद करो इस हंगामे को, बंद करो ये लफ़्फाजी।
ऐसा कहके अमृत घट में तुमने तो विष भर डाला,
जिस थाली में खाया तुमने छेद उसी में कर डाला।।

–अब्दुल गफ्फार, जयपुर

पृष्ठ ३ का शेष... इसलिये शरिया के सर्वोच होने का तर्क किसी के गले नहीं उतर सकता। जमात, देवबंद, कारवां ए इस्लाम आदि ने यह भी कहा है कि वे सर्वोच्च न्यायालय या संसद के किसी फैसले को नहीं मानेंगे। देश की कानून–व्यवस्था, संविधान, संसद किसी को न मानने की मंशा प्रकट करना देश और समाज के लिये बहुत बड़ा खतरा है। यह तो साफ–साफ बगावत है, विद्रोह है और देश की सम्प्रभुता को चुनौती है।

सवाल यह है कि देश बड़ा है या मज़हब? सभी समुदाय अपने मज़हब को देश से बड़ा मानेंगे तो फिर यह देश कतई नहीं चल सकता। फिर तो देश को खण्ड–खण्ड होने से कोई नहीं रोक सकता। इसलिये यह समझने और गहराई से मन में उतारने की जरूरत है कि सबसे बड़ा राष्ट्र–धर्म है और इससे ऊपर कोई मज़हब, पंथ या सम्प्रदाय नहीं है। ❑

राष्ट्र की उपासना करने वाले साहित्यकार

साहित्य उद्‌देश्यपूर्ण भी होता है और स्वान्तसुखाय भी होता है। लेखक, कवि, पत्रकार, कहानीकार जब कुछ सृजन करते हैं तो उसमें वे अपना मन खोल कर रख देते हैं। इसलिये साहित्य समाज का ही नहीं व्यक्ति का अपना दर्पण भी होता है। व्यक्ति जो कुछ है, जैसा है, वह उसकी रचना में प्रकट हो जाता है। कुछ रचनाकार ऐसे होते हैं जो समाज के विद्रूप, समाज और व्यक्ति के अंधेरे पक्ष को ही प्रकट करते हैं। व्यक्ति और समाज में जो कुछ कसैलापन है वे उसी को रचना का केन्द्र-बिन्दु बनाते हैं। ऐसे लेखक कई बार वाह-वाही भी बटोर लेते हैं और 'बुकर' जैसे पुरस्कार भी ले लेते हैं।

अपने देश में लेखन प्राचीन काल से ही उद्‌देश्यपूर्ण और सकारात्मक रहा। रचनाकारों ने व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को ऊँचा उठाने के उद्‌देश्य से कलम हाथ में ली। वे अपने उद्‌देश्य में सफल हुए तथा इस संस्कृति और पुरातन राष्ट्र को दीर्घजीवी बनाने में अपना योगदान दिया। आज भी ऐसे कलमकारों की परम्परा बनी हुई है। ऐसे राष्ट्र की उपासना करने वाले लेखकों, पत्रकारों का संक्षिप्त जीवन-वृत्त **'भारत जिनके मन में बसा'** पुस्तक में संकलित किया गया है। लेखक श्री विजय कुमार ने परिश्रमपूर्वक ऐसे लेखकों का जीवन-परिचय खोज कर अपनी लेखनी से उन्हें प्रस्तुत किया है। पुस्तक में १०४ ऐसे लेखकों, पत्रकारों का उल्लेख है।

वन्देमातरम् के जन्मदाता बंकिम चन्द्र जैसे महान् उपन्यासकार भी इस संकलन में है तथा देवकीनन्दन खत्री जैसे अद्वितीय रचनाकार भी है। सुब्रह्मण्य भारती, निराला जैसे कवि भी हैं तथा अज्ञेय डा. ओबराय जैसे गम्भीर लेखक भी हैं। विष्णु पराड़कर रूसी करंजिया, के. नरेन्द्र, प्रभाष जोशी, माणिक चन्द्र वाजपेयी जैसे पत्रकारों के लघु जीवन-वृत्त भी इस पुस्तक में हैं। इसलिये यह पुस्तक प्रेरक होने के साथ-साथ संदर्भ-ग्रन्थ भी बन गई है। वास्तव में ही पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है।

भारत जिनके मन बसा

ले० : विजय कुमार
मूल्य : ₹ १५०/-
प्रकाशक : विश्व संवाद केन्द्र,
नारायण मुनि भवन,
१६ ए, राजपुर मार्ग, देहरादून

उत्तर – महापुरुष पहचानो
बिरसा मुण्डा

श्रीलंका यात्रा का मनोरम वृत्तांत

अपहरण के बाद लंकापति रावन ने माता सीता को अशोक वाटिका में रखा था। श्रीलंका के पर्यटन विभाग ने उस अशोक वाटिका को आज भी सुरक्षित रखा हुआ है। यही नहीं जहाँ विभीषण का राज्याभिषेक हुआ था वह महल भी सुरक्षित है। मेघनाद ने जहाँ तपस्या की, जहाँ माता सीता ने अग्नि परीक्षा दी, लंका का त्रिकूट पर्वत आदि सभी आज भी विद्यमान हैं तथा संरक्षित हैं। श्रीलंका की सरकार इन स्थानों के दर्शन के लिये यात्राओं का आयोजन करती है। इसी वर्ष फरवरी माह में पूज्य योगी रमणनाथ जी भी श्रीलंका की यात्रा पर गये थे। उनके साथ २८ सदस्यों का एक दल था।

श्रीलंका की इस पाँच-दिवसीय यात्रा का विवरण लेखनीबद्ध कर रमणनाथ जी महाराज ने इसे सुन्दर पुस्तक का रूप दे दिया है। योगी रमणनाथ जी के उत्कृष्ट लेखक भी होने का परिचय इस पुस्तक से मिलता है। सरल और आकर्षण भाषा में उन्होंने सम्पूर्ण यात्रा का वृत्तांत इस पुस्तक में दिया है। पुस्तक पढ़ते-पढ़ते पाठक भी राम-कथा से जुड़े उन स्थानों की सैर करने लगता है। इसलिये कि दर्शनीय स्थलों के मनोहारी चित्र भी इसमें दिये गये हैं। पुस्तक का पठन करते हुए वास्तव में ही सीता-माता की खोज पूरी हो जाती है। पुस्तक का मुद्रण साज-सज्जा आदि सभी उत्कृष्ट हैं। प्रत्येक देश-वासी को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये।

सीता माता की खोज में

ले० : योगी रमणनाथ
मूल्य : ₹ २००/-
प्रकाशक : नाथ कुंज आश्रम, हरमाड़ा
जयपुर- ३०२०३२

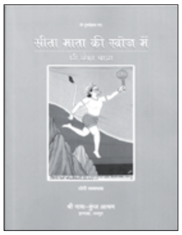

समीक्षा के लिए प्राप्त

भारत के आधुनिक ब्रह्मर्षि

पंडित दीनदयाल उपाध्याय

ले० : विजय नाहर
मूल्य : ₹ ३००/-
पृष्ठ : २४०
प्रकाशक : पिंक सिटी पब्लिशर्स
राम भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर

भूल - सुधार

पाथेय कण १६ अगस्त २०१७ के अंक में देवलोक गमन के समय बाबा रामदेव की उम्र भूलवश १०६ वर्ष प्रकाशित हो गई थी। उनकी आयु उस समय ३३ वर्ष थी। इसके लिए हमें खेद है।

बाबा रामदेव के वंशज आनन्द सिंह तंवर ने उनकी जन्म तिथि चैत्र शुक्ल पंचमी बताई है जबकि इतिहासकार बाबा रामदेव की जन्मतिथि भाद्रपद शुक्ल द्वितीया (दोज) मानते हैं। कुछ विद्वान उनकी जन्म तिथि भाद्रपद शु.१० भी मानते हैं।